पी. एण्ड एस. बैंक

राजभाषा अंकुर

सितंबर 2020

ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ॥
पंजाब एण्ड सिंध बैंक
Punjab & Sind Bank
ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ
पी.एस.बी
(भारत सरकार का उपक्रम / A Govt. of India Undertaking)
राजभाषा विभाग

सुस्वागतम्

बैंक के नए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

श्री एस. कृष्णन जी ने बैंक के नए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का पद ग्रहण किया।

श्री विनय कुमार मेहरोत्रा, महाप्रबंधक, श्री एस. कृष्णन जी प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का फूलों से स्वागत करते हुए।

अपने कक्ष में पद ग्रहण करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एस. कृष्णन जी का तालियों से स्वागत करते हुए बैंक के कार्यकारी निदेशक श्री अजित कुमार दास एवं अन्य उच्चाधिकारी गण

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग की हिंदी पत्रिका

राजभाषा अंकुर

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

बैंक हाउस, प्रथम तल, 21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली – 110008

सितंबर 2020

मुख्य संरक्षक
श्री एस. कृष्णन
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

संरक्षक
श्री अजित कुमार दास
कार्यकारी निदेशक

मुख्य संपादक
श्री अमित श्रीवास्तव
उप महाप्रबंधक
सह मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक एवं प्रकाशक
श्री निखिल शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल
श्री देवेन्द्र कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
डॉ. नीरू पाठक, प्रबंधक
श्री मोहन लाल, राजभाषा अधिकारी

ई–मेल : hindipatrika@psb.co.in
पंजीकरण सं.: एफ.2(25) प्रेस. 91
(पत्रिका प्रकाशन तिथि : 31/10/2020)

'राजभाषा अंकुर' में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार, संबंधित लेखक के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं है। सामग्री की मौलिक एंव कॉपी राइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

मुद्रक : जैना ऑफसेट प्रिंटर्स
ए 33/2, साइट–4, साहिबाबाद इंडस्ट्रीयल एरिया,
गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश
फोन नं. : 98112 69844
ई–मेलः jainaoffsetprinters@gmail.com

विषय सूची

क्रम सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	संपादक मंडल/विषय सूची	1
2.	गृहमंत्री का संदेश	2–3
3.	प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश	4
4.	कार्यकारी निदेशक का संदेश	5
5.	संपादकीय	6
6.	सेवानिवृत्त प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी	7
7.	आपकी कलम से	8
8.	हार और जीत	9
9.	राष्ट्र निर्माण में भाषा की भूमिका	10–12
10.	नराकास उपलब्धियाँ/संगोष्ठी	13
11.	बैंकों के निजीकरण का बैंकों पर प्रभाव	14.15
12.	प्रधान कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा	16–17
13.	पीएसबी एलाएंस–डोर स्टेप बैंकिंग	18–20
14.	ग्राहक के मुख से	20
15.	पत्रिका का गौरव	21
16.	आँचलिक कार्यालयों में हिंदी दिवस	22–23
17.	कार्टून–कोना/जरा सोचिए...	24
18.	रावण जिंदा है	25–27
19.	एकाग्रता की शक्ति (उर्दू कहानी हिंदी रूपांतर सहित)	28–29
20.	काव्य–मंजूषा	30–31
21.	मध्यप्रदेश : कला एवं संस्कृति का समामेलन	32–35
22.	उद्घाटन	35
23.	संस्मरण	36–39
24.	विदाई/रचनाकारों से निवेदन	40
25.	हिंदी कार्यशाला	41
26.	बैंक और ग्राहक के मध्य भाषा का महत्त्व/ विमोचन	42–43
27.	नोवल कोरोना वायरस	44

अमित शाह
गृह मंत्री
भारत

AMIT SHAH
HOME MINISTER
INDIA

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिन के शुभ अवसर पर, मैं सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देना चाहता हूं।

पूरी दुनिया में हमारा देश, एक अलग प्रकार का देश है । कई प्रकार की संस्कृतियां, कई प्रकार की कलाएं और कई प्रकार की भाषाओं का मेलजोल यहां पर दिखाई पड़ता है। यह हमारी बहुत बड़ी ताकत है । हम सभी दृष्टि से एक संपन्न राष्ट्र हैं । अनेक भाषाएं एवं संस्कृतियां हमारी न केवल विरासत हैं, हमारी ताकत भी हैं, इसलिए हमें इसको आगे बढ़ाना है। सांस्कृतिक व भाषाई विविधता से भरे, इस गौरवशाली देश में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण के बीच, सदियों से, कई भाषाओं ने संपर्क बनाए रखने का काम किया है। हिंदी इसमें प्रमुख भाषा रही है और ये योगदान जो हिंदी का है इसको देश के कई नेताओं ने समय-समय पर सराहा है और हिंदी ने भारत को एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया है। हिंदी भाषा और बाकी सारी भारतीय भाषाओं ने मिलकर भारत की सांस्कृतिक विविधता को आगे ले जाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है । हिंदी के साथ बृज, बुंदेलखंडी, अवधी, भोजपुरी, अन्य भाषाएं और बोलियां इसका उदाहरण हैं। हिंदी हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम के समय से राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का प्रभावी व शक्तिशाली माध्यम रही है। हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति इसकी वैज्ञानिकता, मौलिकता, सरलता, सुबोधता और स्वीकार्यता भी है। हिंदी भाषा की विशेषता है कि इसमें जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है। हिंदी की इन विशेषताओं एवं सर्वग्राह्यता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया।

भारतीय सभ्यता, संस्कृति और संस्कारों की अविरल धारा, मुख्य रूप से हिंदी भाषा से ही जीवन्त तथा सुरक्षित रह पाई है। हिंदी भाषा ने, बाकी स्थानीय भाषाओं को भी,बल देने का प्रयास किया है । हर राज्य की भाषा को,हिंदी ताकत देती है । हिंदी की प्रतिस्पर्धा कभी भी स्थानीय भाषा से नहीं रही, यह पूरे भारत के जनमानस में ज्यादा स्पष्ट होने की जरूरत है । 26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' व लिपि 'देवनागरी' होगी। अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं का प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए, जहां आवश्यक है या वांछनीय हो, वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से, और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए, हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करने के लिए आवश्यक है कि सरकारी कामकाज अनुवाद की अपेक्षा मूल रूप से हिंदी में किया जाए और अन्य स्थानीय भाषाओं में इसका अनुवाद किया जाए । भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/उपक्रमों तथा बैंकों इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से मेरा विनम्र आग्रह है कि स्थानीय भाषाओं के साथ-साथ वे सरकारी कामकाज में, मूल रूप से हिंदी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिले।

माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में आज भारत एक संसाधन-संपन्न शक्तिशाली देश के रूप में उभर रहा है और इसमें देश की समृद्ध भाषा हिंदी का बहुत बड़ा योगदान है। वैश्विक मंचों पर प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में दिए गए भाषणों से, हिंदी का वैश्विक कद मजबूत हुआ है और हिंदी प्रेमियों को प्रेरणा भी मिल रही है। इससे देश की युवा पीढ़ी भाषा के साथ जुड़ने की ओर अग्रसर हुई है। बस, आवश्यकता इस बात की है कि आगामी पीढ़ी को अधिक से अधिक सूचनाएं हिंदी में उपलब्ध कराई जाएं और उनमें ऐसे संस्कार विकसित किए जाएं कि वह मूल रूप से हिंदी भाषा में काम करें।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है
– महात्मा गाँधी

वर्तमान समय में कोई भी भाषा सूचना प्रौद्योगिकी के बिना पल्लवित और पोषित नहीं हो सकती। राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी का और अधिक प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध है और इस दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है। प्रधानमंत्री जी के 'आत्मनिर्भर भारत' के अभियान को आगे बढ़ाते हुए, राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के लिए ई-टूल्स सुदृढ़ करने का काम किया जा रहा है। 'वोकल फॉर लोकल' के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों में विभाग द्वारा निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' का विस्तार किया जा रहा है जिससे अनुवाद के क्षेत्र में समय की बचत करने के साथ-साथ एकरूपता और उत्कृष्टता भी सुनिश्चित की जा सके। इसके अतिरिक्त लीला हिंदी प्रवाह, ई-महाशब्दकोश मोबाइल एप्लीकेशन भी हिंदी प्रेमियों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। राजभाषा विभाग द्वारा ई-सरल हिंदी वाक्यकोश का विकास किया जा रहा है।

राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में, हिंदी गृह-पत्रिकाओं का विशेष महत्व है। राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए ई-पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाली ई-पत्रिकाओं से लाभान्वित हो पाएंगे। आज हिंदी दिवस के मौके पर मेरा यह कहना है कि सभी मंत्रालय सरकारी कामकाज में इन ई-टूल्स का अधिक से अधिक प्रयोग सुनिश्चित करें।

विगत कई माह से पूरी दुनिया अत्यंत विषम परिस्थिति से गुज़र रही है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत कोरोना महामारी से लड़ने में सफल रहा और इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों के साथ प्रत्यक्ष नागरिकों ने भी सहयोग किया है। समय-समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर देश की जनता को कोरोना महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया। कोरोना महामारी से उत्पन्न अप्रत्याशित संकट की स्थिति के कारण, जनहित को प्राथमिकता देते हुए इस वर्ष 'हिंदी दिन समारोह' का आयोजन नहीं किया जा रहा है लेकिन जिन मंत्रालयों, विभागों, संस्थाओं, बैंकों, सरकारी उपक्रमों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों ने पूरे वर्ष पूरी निष्ठा से हिंदी में श्रेष्ठ कार्य किया है और प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार जीते हैं, उन्हें मैं अपनी ओर से बहुत-बहुत बधाई देता हूं। इसके साथ-साथ हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन और पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए प्रदान किए जाने वाले राजभाषा गौरव पुरस्कार विजेता भी बधाई के पात्र हैं ही। मैं आशा करता हूं कि आप सभी पुरस्कार विजेता यहीं से थकेंगे नहीं, भविष्य में, हिंदी के लिए कार्य करने के लिए, उच्च और अनुकरणीय मानदंड प्रस्थापित करते रहेंगे । ये प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा थी कि देश इस आपदा को अवसर में परिवर्तित करे । राजभाषा विभाग ने भी इस अवसर का सकारात्मक उपयोग करते हुए सूचना तकनीक का सहारा लिया और पहली बार वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग जैसे ऑनलाइन माध्यमों के जरिए, बड़ी संख्या में, ई-निरीक्षण एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया। राजभाषा विभाग के प्रशिक्षण केंद्र, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन शुरू किया गया जिसमें परंपरागत क्लासरूम टीचिंग को परिवर्तित कर, ऑनलाइन वेब कांफ्रेंसिंग टूल के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन करें, तत्परता के साथ अनुपालन करें । हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अधिकारियों/कर्मचारियों से राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ, निर्बाध रूप से उठा पाए ।

आइए ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम प्रतिज्ञा लें कि हिंदी की उन्नति व प्रगति की यात्रा पूरे समर्पण के साथ हम आगे बढ़ाते हुए, हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी को सभी स्थानीय भाषाओं के साथ में रखते हुए, हिंदी के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करेंगे। इस मौके पर, मैं देश के युवाओं को भी कहना चाहता हूं कि जब स्थानीय भाषा में बोलने वाला साथी हो तब और कोई भाषा का प्रयोग न करते हुए भारतीय भाषाओं के प्रयोग का आग्रह रखिए । मैं अभिभावकों को भी कहना चाहता हूं,- अपने बच्चों के साथ भारतीय भाषाओं में बात करने की बात का संस्कार डालें और अपनी भाषाओं की यात्रा को हम आगे बढ़ाएं । मोदी सरकार की नई शिक्षा नीति से अन्य भारतीय भाषाओं व हिंदी का समानांतर विकास होगा, ऐसा मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे सामूहिक प्रयासों से हिंदी न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु, विश्वपटल पर ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण समृद्ध भाषा के रूप में स्थापित होगी।

'हिंदी दिन' के शुभ अवसर पर आप सभी को पुन: मैं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

भारत माता की जय !

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2020

(अमित शाह)

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी महोदय का संदेश

प्रिय पीएसबीएन,

आप सभी को मेरी ओर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

"राजभाषा अंकुर" पत्रिका के माध्यम से आपसे संवाद स्थापित करते हुए मैं आत्मीय प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। हिंदी मात्र एक भाषा ही नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति की सबल, सशक्त तथा समर्थ संवाहिका भी है। इसलिए 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को संघीय राजभाषा के रूप में स्वीकार किया और तभी से यह दिन हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। हमारे बैंक का, भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा वर्ष 2019–20 में "क" क्षेत्र में श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए सर्वोच्च पुरस्कार "कीर्ति शील्ड (द्वितीय) के लिए चयन किया गया है। इसके लिए राजभाषा विभाग के साथ आप सभी बधाई के पात्र हैं। मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि भविष्य में भी अधिक से अधिक अपने दैनिक कार्य हिंदी में ही करें।

साथियों, हमारे संविधान में 22 भारतीय भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। बैंक में विभिन्न भाषा–भाषी स्टाफ को ध्यान में रखकर, अंकुर पत्रिका में एक प्रादेशिक भाषा को भी स्थान दिया गया है, यह प्रयास सराहनीय है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सभी न केवल राजभाषा के क्षेत्र में बल्कि बैंक की प्रगति के लिए भी प्रत्येक व्यवसायिक क्षेत्र में पूर्ण समर्पण एवं सेवा भाव से कार्य करेंगे जिससे बैंक नए कीर्तिमान स्थापित कर सकें।

एस. कृष्णन

(एस. कृष्णन)

कार्यकारी निदेशक महोदय का संदेश

साथियो,

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

भारतीय संविधान द्वारा दिनांक 14 सितंबर, 1949 को धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक परंपराओं को जोड़ने तथा अधिकांश देशवासियों द्वारा बोली एवं समझी जाने वाली हिंदी भाषा को संघ की राजभाषा के रूप में चुना गया और तब से हिंदी भाषा में कार्य करना हमारी संवैधानिक जिम्मेदारी है। मुझे यह बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारे बैंक को भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए वर्ष 2019–20 का कीर्ति पुरस्कार (द्वितीय) प्राप्त हुआ है। बैंक के लिए अत्यंत सम्मान एवं गौरव का विषय है। इसके लिए मैं राजभाषा विभाग के साथ आप सबको भी बधाई देता हूँ। इसके साथ ही न केवल हिंदी पखवाड़े में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को, हिंदी शील्ड विजेताओं को बल्कि हिंदी प्रतियोगिताओं में सहभागिता करने वाले सभी स्टाफ सदस्यों को भी बहुत–बहुत बधाई। अपने उत्साह को इसी प्रकार बनाए रखें तथा भविष्य में भी राजभाषा में अधिक से अधिक कार्य करें तथा बैंक को गौरवान्वित करें।

हिंदी दिवस के अवसर पर पुनः मेरी शुभकामनाएं।

अजित कुमार दास

संपादकीय

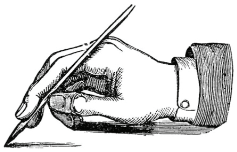

प्रिय पाठको,

राजभाषा अंकुर के माध्यम से अपने मन की बात आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करने में मुझे सदैव ही खुशी होती है और इस बार तो विशेष रूप से हमारे लिए अत्यंत गौरव एवं प्रसन्नता की बात है कि हमारे बैंक को "क" क्षेत्र की श्रेणी में श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए भारत सरकार, गृह मंत्रालय का प्रतिष्ठित "कीर्ति पुरस्कार (द्वितीय)" प्राप्त हुआ है। इसके लिए न केवल राजभाषा विभाग अपितु बैंक के सभी कार्मिक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से बधाई के पात्र हैं। इसके साथ ही हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में आप सभी ने बढ़–चढ़कर सहभागिता की। मैं, न केवल प्रतियोगिताओं के विजेताओं का बल्कि जिन्होंने प्रतियोगिताओं में सहभागिता की उन सभी का भी राजभाषा विभाग की ओर से आभार व्यक्त करता हूँ।

बैंक में राजभाषा को बढ़ावा देने में अंकुर पत्रिका भी अपनी भूमिका पूरे जोर–शोर से निभा रही है। पत्रिका के माध्यम से हम न केवल राजभाषा बल्कि बैंक और इससे जुड़ी अन्य गतिविधियों पर भी प्रकाश डालते हैं। पत्रिका के प्रस्तुत अंक में राजभाषा हिंदी तथा बैंकिंग से संबंधित लेखों के साथ समकालीन परिस्थितियों के कारण कोविड–19 महामारी से संबंधित जानकारी भी प्रकाशित कर रहे हैं। भाषिक एकता सूत्र संयोजन की कड़ी में इस बार सुश्री नेहा नईम द्वारा रचित उर्दू भाषा में कहानी (हिंदी रूपांतर सहित) पत्रिका का विशेष आकर्षण है।

साथियो, "राजभाषा अंकुर" एक प्रयास है बैंक में हिंदी भाषा के प्रचार और प्रसार का। आशा है कि बैंकिंग एवं साहित्यिक विविधताओं से परिपूर्ण यह अंक भी आपको पसंद आएगा। पत्रिका के बारे में अपनी प्रतिक्रिया हमें अवश्य भेजें, ताकि हम अपनी पत्रिका को अपने पाठकों की रुचि तथा आवश्यकतानुसार ढाल सकें।

अमित श्रीवास्तव
उप महाप्रबंधक
सह मुख्य राजभाषा अधिकारी

श्री एस. हरिशंकर

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, पंजाब एण्ड सिंध बैंक (19.09.2018 से 03.09.2020)
बैंकर, अर्थशास्त्री, मार्गदर्शक, प्रेरणास्रोत एवं सहृदय व्यक्तित्व के पर्याय

श्री एस. हरिशंकर जी ने दिनांक 19.09.2018 को हमारे बैंक में प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी के पद पर कार्यभार ग्रहण किया था। सन् 1985 में श्री एस. हरिशंकर जी ने स्टेट बैंक ऑफ त्रावनकोर में परिवीक्षाधीन अधिकारी के पद से, सफलतापूर्वक निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर होते हुए मई 2016 में स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर में मुख्य महाप्रबंधक के पद पर कार्यभार संभाला। उन्नति के नए सोपान निर्धारित करते हुए उन्होने 18 फरवरी 2017 को इलाहाबाद बैंक में कार्यकारी निदेशक के पद को तथा इसके पश्चात 19 सितंबर 2018 को हमारे अर्थात् पंजाब एण्ड सिंध बैंक में प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी के पद को सुशोभित किया। परिवीक्षाधीन अधिकारी से प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी के पद पर विभिन्न सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में उन्होंने सफलतापूर्वक बैंकिंग सेवाओं का निर्वहन किया और उन्नति के शिखर को छुआ। हमारे बैंक में उनकी कुल सेवा अवधि लगभग दो वर्षों की रही। देश में नोट–बंदी, अर्थव्यवस्था में उतार–चढ़ाव, जीएसटी और कोरोना वायरस, इन प्रतिकूल परिस्थितियों में बैंक ने उनके मार्ग–दर्शन में विभिन्न क्षेत्रों में अनेक उपलब्धियाँ हासिल की।

बैंक ने 14 वें वार्षिक सोशल बैंकिंग एक्सीलेंस अवार्ड्स, 2018 लघु वर्ग के लिए प्राथमिकता क्षेत्र लैंडिंग (कृषि क्षेत्र से अतिरिक्त) के अंतर्गत ASSOCHAM से सर्वश्रेष्ठ बैंक का सोशल बैंकिंग एक्सीलेंस पुरस्कार जीता। बैंक को लघु बैंकों के अंतर्गत सर्वश्रेष्ठ वित्तीय समावेशन पहल की श्रेणी में भारतीय बैंक संघ द्वारा 'बैंकिंग प्रौद्योगिकी, सम्मेलन, एक्सपो एंड अवार्ड्स 2019' के रनर अप के रूप में चुना गया था।

श्री एस. हरिशंकर जी ने बैंक के सभी कर्मचारियों के लिए बैंकिंग के विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए। बैंकिंग प्रबंधन का अपने समस्त स्टाफ के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध निर्माण के अतुलनीय कार्य का श्रेय भी उन्हीं को जाता है।

बैंक परिवार श्री एस. हरिशंकर जी के अनुपम योगदान और मार्गदर्शन के लिए हृदय से आभार व्यक्त करता है और उनके स्वस्थ, उज्ज्वल तथा समृद्ध सेवानिवृत्त जीवन की कामना करता है।

आपकी कलम से

पत्रिका के प्रकाशन के लिए गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग द्वारा आपकी सराहना की जाती है। हिंदी को सरकारी कामकाज में बढ़ावा देना हम सभी का संवैधानिक दायित्व है।

डॉ. नीरू पाठक का लेख सराहनीय है।

पर्यावरण संरक्षण की समस्या को ध्याना में रखते हुए ई–पत्रिका प्रकाशित करने का प्रयास किया जाए और उसे राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर ई–पत्रिका पुस्तकालय में अपलोड किया जाए।

आशा है आप भविष्य में भी राजभाषा के प्रगामी प्रयोग के प्रति इसी प्रकार निष्ठा एवं समर्पण से प्रयास जारी रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

मंजुला सक्सेना
उप सचिव (अनुसंधान)
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार

"राजभाषा अंकुर" का नवीनतम अंक (जून, 2020) प्राप्त हुआ। धन्यवाद। पत्रिका के अवलोकन से इस बात का एहसास होता है कि कोविड-19 महामारी के इस कठिन दौर में भी पत्रिका को सारगर्भित एवं उत्कृष्ट बनाने के पूर्ण प्रयास किये गए है। इसकी सामग्री का चयन इस रूप में किया गया है कि जीवन के अधिकतम पक्षों का समावेश हो जाए। समस्त विषय रोचक एवं ज्ञानवर्धक है।

कोरोना एवं अर्थव्यवस्था नामक आलेख वर्तमान आर्थिक दौर का रेखाचित्र प्रस्तुत करता है। बैंकिंग पर भी विविध सामयिक विषयों पर आलेखों को स्थान दिया गया है जो ज्ञानवर्धक एवं विषयानुरूप है। वर्तमान वैश्विक चुनौती कोविड-19 महामारी पर भी जागरूकता पैदा करने वाली जानकारी एवं इस लडाई में अहम भूमिका निभाने वाले कोरोना योद्धाओं के योगदान को चित्रात्मक रूप में दर्शाया है जो उनके प्रति कृतज्ञता एवं आभार प्रदर्शन करता है। हिन्दी साहित्य पर साहित्यिक लेख में वर्तमान साहित्यिक दशा एवं मानसिकता को उजागर किया है। काव्य-मंजूषा में भावपूर्ण कविताओं का समावेश है। अन्य रोचक सामयिक लेख, क्षेत्रीय भाषा पंजाबी की रचना एवं बहुआयामी व्यक्तित्व डॉ.भीमराव अंबेडकर के व्यक्तित्व पर आलेख पत्रिका को विशिष्ट एवं रचनावैविध्य से संपन्न बनाता है।

हम आपके सार्थक प्रयासों की प्रशंसा करते है तथा आपको इसके लिए बधाई देते हुए पत्रिका के अगले अंक हेतु अग्रिम शुभकामनाएं।

सधन्यवाद।

अजय कुमार
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
इंडियन बैंक

हमें राजभाषा "अंकुर" मार्च 2020 (महिला सशक्तिकरण विशेषांक) का अंक प्राप्त हुआ, इसके लिए आपको बहुत बहुत आभार! इस विशेष अंक की पत्रिका में जो सामग्री प्रकाशित की गई हैं, वह सामाजिक, आर्थिक, महिला सशक्तीकरण, और सांस्कृतिक परिवेश की दृष्टि से अत्यंत लाभदायक/ज्ञानवर्धक है। इसके अतिरिक्त यह पत्रिका हमें वर्तमान बैंकिंग व राजभाषा संबंधी गतिविधियों से भी अवगत कराती है और साथ ही हम सब अपने स्टाफ सदस्यों के विचारों से भी परिचित होते हैं। हमारी राजभाषा "अंकुर" अब पंजाब एण्ड सिंध बैंक की एक विशेष पहचान बन चुकी है। पत्रिका में प्रत्येक पृष्ठ के नीचे सुविचार, उद्धरण या जो विशेषांक संबंधी सामान्य जानकारी दी जाती है। यह वास्तविक रूप से प्रशंसनीय है। इसके अतिरिक्त 'जरा सोचिए' में व्यक्तिगत प्रेरणादायी किस्से के लिए भी जगह देकर पत्रिका को और भी रुचिकर बना दिया गया है। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रोत्साहन संबंधी तकनीकी जानकारी भी बहुत ही लाभकारी व सराहनीय हैं। पत्रिका में बैंक की गतिविधियों के समस्त छायाचित्रों का जो समावेश किया गया है वह भी अत्यंत प्रशंसनीय है। इस पत्रिका को बैंकिंग जगत के सम्मुख रखने पर पत्रिका लेखक/संपादक मण्डल/प्रकाशक सभी को हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ।

विजय कुमार निरंजन
आँचलिक प्रबंधक
अंचल बरेली

हमें बैंक की पत्रिका राजभाषा अंकुर के जून 2020 अंक प्रतियाँ प्राप्त हुईं। इस अंक की साज–सज्जा एवं जगह–जगह से संगठित फोटो अति सुंदर हैं। हमारे कार्यालय की ओर से आपको बहुत–बहुत बधाई।

हमें आशा है कि आपकी यह पत्रिका आगे भी ऐसे ही सभी को प्रेरित और प्रसन्न करती रहेगी।

शुभकामनाओं सहित,

विनोद कुमार पाण्डेय
आँचलिक प्रबंधक
अंचल दिल्ली-2

विजय कुमार निरंजन

हार और जीत

हमारा जीवन हार – जीत से अवलेपित है। 'हार' यदि नियति है तो जीत हमारी जिद का अनुत्पाद। सफलता का रास्ता "कंटकाकीर्ण" हैं, कांटो से भरा है अर्थात आसान नही है। सफलता बिना बाधाओं के नहीं आती। सफलता हर बार हार के करीब ले जाती है। हार से हार मानकर बैठ जाना जीवन नहीं है, जिद से हार को हराना ही सफलता का रहस्य है। एक बड़े लक्ष्य की ओर बढ़ते मनुष्य को हमेशा चिंता रहती है कि क्या वह अपनी "मंजिल" हासिल कर लेगा या नही ? वह बाधाओं की चिंता करने लगता है। मार्ग की दुविधाओं पर विचार करने की प्रक्रिया में लक्ष्य की ओर फोकस से विचलित हो जाता है।

"सफलता" और "असफलता" में अधिक अंतर नहीं है। "सफलता" की यात्रा दुर्गम है "असफलता" की यात्रा भी यहीं तक होती है। असफलता उनको हाथ लगती है जो अंतिम क्षण में टूट जाते हैं और जो व्यक्ति उस अंतिम क्षण में भी अपने आत्मविश्वास के साथ लक्ष्य के प्रति लगातार संघर्षरत रहते हैं उन्हें ही सफलता का शिखर प्राप्त होता है।

हारने के डर से अनुकूल परिस्थितियों की तलाश... 'लक्ष्य–विकल्पों' की ओर बढ़ाया गया कदम सबसे बड़ी हार है। विकल्प हमें विचलित करते हैं। लक्ष्य विराट हो तो हारने का डर लगातार होता है। ऐसे में हार से बचने की ओर ध्यान देना लक्ष्य को मात देने की प्रक्रिया का हिस्सा है। सफल व्यक्तियों ने हार के डर का निषेध किया। अपनी उलझनों को सुलझाया और बुलंदियों की ओर बढ़ गए। ऐसा नहीं है कि जीवन में अत्यंत सफल लोगों ने केवल सफलता ही देखी है, केवल जीत ही देखी है। कई 'हार' से सीख कर एक लक्ष्य की ओर बढ़ने वाले व्यक्तियों की लंबी फेहरिस्त है।

जीवन का अर्थ केवल जीतना नहीं है। यह जीवन के प्रति नकारात्मक चेतना है। जीवन में यदि आप कभी हारते हैं, तो वह आगे बढ़ने का सबक है। हार हुई है, तो पता कीजिए कहां कमी रह गई है। प्रयासों में कमी है, तो कोशिश तेज कीजिए।

यदि माहौल आपके अनुकूल नहीं है, तो परिस्थितियों को अपने पक्ष में कीजिए। अगर आपने हार को हराने की ठान ली तो जीत मिलकर ही रहेगी।

मूक फिल्मों के दौर में हास्य व्यंग्य का एक नामचीन चेहरा है सर चार्ल्स स्पेन्सर चैपलिन, जिसे दुनिया 'चार्ली चौपलिन' के नाम से जानती है। उसके जीवन का एक हिस्सा बेहद गरीबी, मजदूरी और पारिवारिक बोझ के तनाव के बीच व्यतीत हुआ।

नौ वर्ष की अवस्था में मजदूरी के लिए मजबूर हुए 'चार्ली' की एक मात्र शक्ति उसकी मां थी, जो उसके 14 वर्ष की अवस्था में 'मानसिक' अवसाद का शिकार हो चुकी थी। संघर्षों के इस दौर में 'हारने' के भय ने उसे अपने शौक से जोड़ दिया। उसने नाट्य मंचनो में हिस्सा लिया और 19 वर्ष की अवस्था में वह एक 'कॉमेडियन' बन गया था। वर्ष 1914 में 25 वर्ष की अवस्था में उसने पहली फिल्म 'द ट्रैम्प' में काम किया। कलाकार 'चार्ली चैपलिन' का सारा संघर्ष उसके जिंदादिली में निबद्ध हो गया। वर्ष 1918 का 'चार्ली चैपलिन' दुनिया के सर्वाधिक लोकप्रिय व्यक्तियों की सूची में शामिल था। चार्ली की जिद्द ने उसे 'चार्ली चैप्लिन' बना दिया। संघर्षों, परेशानियों, और जहालत से यदि चार्ली डर जाता, तो वह 'कलाकार' नहीं बन पाता। इसलिए कभी भी हार ना माने और अडिग रहे।

आँचलिक प्रबंधक,
बरेली

निखिल शर्मा

राष्ट्र निर्माण में भाषा की भूमिका

भाषा मानव समाज की अप्रतिम उपलब्धि है। भाषा भावों, विचारों की अभिव्यक्ति व भावसम्प्रेषण का सर्वसुलभ व सशक्त साधन है। तात्विकरूप से भाषा ध्वनि प्रतीकों की एक व्यवस्था है जिसके माध्यम से मानव समूह विचार–विनिमय करता है। इन्हीं ध्वनि–प्रतीकों या शब्दों के भाव शब्द या भाषा द्वारा ही मानव समाज में प्रचलित होते हैं। शब्द की इसी महत्ता के कारण ''सर्वम शब्देन भासते'' तथा ''शब्दब्रह्म'' की परिकल्पना साहित्य जगत में प्रचलित है। काव्यदर्श में भाषा की शब्दात्मक महिमा की ओर संकेत किया गया है।

"इतम् अन्धतमः कृत्स्नं जायेत भुवन त्रयं।
यदि शब्दाहव्यं योतिरासंसारम् न दीप्यते"।

इसका अभिप्राय है कि यदि शब्दरूपी ज्योति न होती तो यह सम्पूर्ण जगत अन्धकार में ही रहता अर्थात् अव्यक्त ही रह जाता। वस्तुतः भाषा ही ज्ञान का सर्वसुलभ माध्यम है। इतना ही नहीं, भाषा ही किसी देश की सच्ची पहचान, उस देश की संस्कृति की संवाहिका होती है। किसी भी राष्ट्र की वैचारिक एवं सामाजिक एकता का आधार भी भाषा ही है।

राष्ट्र की अवधारणा में तीन तत्व अत्यन्त महत्वपूर्ण है–

1. भाषा
2. संस्कृति एवं
3. देश की भौगोलिक परिसीमा अर्थात् मातृभूमि।

वस्तुतः भाषा ही संस्कृति का आधार है, भाषा एवं संस्कृति की भूमिका निर्विवादरूप से महत्वपूर्ण है। भाषा में मानव को बाँधने की अपूर्व शक्ति है। विचार–विनिमय मानव एकता का सबल सूत्र है। भाषा का मूल आधार भाव सम्प्रेषण है। सम्प्रेषण से ही सभी सामाजिक कार्य–व्यापार निष्पादित किए जाते हैं। विचारों की एकता राष्ट्र के नागरिक की सबसे बड़ी एकता होती है।

भाषा का उपयोग कई तरीकों से किया जाता है। उनमें से एक विशिष्ट उद्देश्य राष्ट्र निर्माण है, जैसे कि सामाजिक या सांस्कृतिक संचार, सरकार के फैसले, राजनीतिक बहस, मीडिया जो संबंधित सामग्री को व्यक्त करने की क्षमता से जुड़ा हुआ है।

जब हम भाषा और उपनिवेशवाद से संबंधित होते हैं, तो औपनिवेशिक साम्राज्य की ताकत उपनिवेशवादियों और उपनिवेशों के बीच प्रभावी संचार पर निर्भर थी। उदाहरण के लिए भारत में, यह बहुत स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि ब्रिटिश कम्पनी ने अपनी भाषा को थोपने के लिए विभिन्न रणनीतियों को अपनाया। प्रत्येक सांस्कृतिक समूह की अपनी स्वयं की अर्ध–प्रणालियाँ, अनुभव या मूल्य होते हैं। विभिन्न कलात्मक परंपराओं या धर्मों को सीखना लोगों को यह समझने की अनुमति देता है कि वे क्या और कैसे हैं।

भाषा का उपयोग राजनीतिक और सामाजिक अर्थ के रूप में भी किया जाता है, क्योंकि यह राष्ट्रीय पहचान के महत्वपूर्ण और आवश्यक तत्व के रूप में राष्ट्र के निर्माण की प्रक्रिया है।

राष्ट्रीय पहचान एक राजनीतिक अर्थ में एक उपकरण है, लेकिन इसे घरेलू नीति के एक साधन के रूप में भी माना जाता है जो एक समेकित समाज के निर्माण को बनाए रखने की अनुमति देता है। इसमें राष्ट्र या राज्य के प्रति निष्ठा शामिल है। प्रत्येक सरकार को जनता की राय के समर्थन की आवश्यकता होती है। वास्तव में, पूरे क्षेत्र में एक आम भाषा का उपयोग इसके निवासियों को एकजुट करता है।

भारत विभिन्न भाषाओं और बोलियों का एक गुलदस्ता है। हमारे पास हड़प्पा, मौर्य से मुगल और अंग्रेजों की महान सभ्यताओं की धरोहर है। यदि हम भारतीय संस्कृति को करीब से देखें, तो हमें ग्रीक (यूनानी), फारसी, हरप्पन, अरबी, मंगोलियन, प्री–वैदिक, आर्यन द्रविड़ और नवीनतम मुगल और अंग्रेज़ी सभ्यताओं की झलक मिल जाएगी।

उन्नीसवीं शताब्दी में भारत में भावनात्मक संदर्भ की क्रांति शुरू हुई। उस समय देश की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति अत्यन्त दयनीय हो चुकी थी। देश में होने वाले आन्दोलनों से जन–जीवन प्रभावित हो रहा था। भारत की राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए एक भाषा की आवश्यकता सामने आई। इस आवश्यकता के संदर्भ में डॉ. अम्बा शंकर नागर का मन्तव्य उद्धरणीय है–

"सन् 1857 का आन्दोलन दासता के विरूद्ध स्वतंत्रता का पहला आन्दोलन था। यह आन्दोलन यद्यपि संगठन और एकता के अभाव के कारण असफल रहा, पर इसने भारतवासियों के हृदय में स्वतंत्रता की उत्कृष्ट अभिलाषा उत्पन्न कर दी। आगे चलकर जब भारत के विभिन्न प्रांतों में स्वतंत्रता के लिए संगठित प्रयत्न आरंभ हुए तो यह स्पष्ट हो गया कि बिना एक समान्य भाषा के देश में संगठन होना असंभव है"।

उन्नीसवीं सदी में भारतीय पुनर्जागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदभाष्य हिंदी में किए तथा अपना महान ग्रंथ ''सत्यार्थ प्रकाश'' हिंदी में लिखा। हिंदी का प्रयोग हिन्दू–मुसलमान, सिख, ईसाई सभी करते हैं। हिंदी साहित्य के इतिहास के अध्ययन से यह बात सिद्ध है कि सिद्धों, नाथों, संतों तथा अनेक पंथों के आचार्यों ने इसे अपने ज्ञान, अध्यात्म तथा उपदेश के प्रचार–प्रसार का माध्यम बनाया। अमीर खुसरो, मलिक मुहम्मद, जायसी, रहीम, रसखान आदि सूफी संतों तथा कवियों ने हिंदी में काव्य रचनाएं की। अहिंदी भाषी प्रान्तों के अनेक मनीषियों ने हिंदी को अपनाया तथा देश की स्वतंत्रता आन्दोलन में हिंदी के गीतों एवं नारों ने नवजागरण का मंत्र फूंका। चाहे रामप्रसाद बिस्मिल की सरफरोशी की तमन्ना हो, या श्यामलाल गुप्ता का विजयी विश्व तिरंगा प्यारा का जागरण मंत्र, यह सब हिंदी के माध्यम से ही जनमानस में प्रचारित किया गया। इसी कारण से संविधान निर्माताओं ने यह अनुभव किया था कि बहुभाषी भारतवर्ष में एकता की भावना को दृढ़ करने की आवश्यकता है जिसमें हिंदी भाषा ही सर्व समर्थ है।

बंगाल के राजा राममोहन राय जी ने कहा था कि समस्त भारत को एकता के सूत्र में बाँधे रखने के लिए हिदीं अनिवार्य है। परवर्ती ब्रह्म समाज के यशस्वी नेता केशवचन्द्र सेन ने सन् 1885 में अपने लेख में लिखा, भारतीय एकता का उपाय है सारे भारत में एक भाषा का व्यवहार हो।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में सामाजिक, धार्मिक ही नहीं, राजनीतिक आंदोलनों में हिंदी मुख्य भाषा सिद्ध हुई इस प्रकार हिंदी को व्यापक जनाधार मिला। राष्ट्रीय भावना जगाने हेतु हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग किया गया।

राष्ट्र के निर्माण में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह बात इसलिए भी महत्व की है कि भाषा अगर एक ओर राष्ट्र निर्माण का महत्वपूर्ण उपादान बन सकती है तो वहीं दूसरी ओर वह समाज में तनाव द्वंद, विद्वेष और विघटन की प्रवृत्ति को भी जन्म दे सकती है।

मदन मोहन मालवीय जी के मन में हिंदी के लिए विशेष आदर भाव था, इसलिए उन्होंने शिक्षा में हिंदी की अनिवार्यता पर बल दिया। सन् 1917 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना इसी दृष्टि से हुई। यहाँ के सभी विद्यार्थियों के लिए हिंदी शिक्षा अनिवार्य थी। उन्होंने हिंदी भाषा के विषय में स्पष्ट रूप से कहा था–"राष्ट्रीय शिक्षा अपनी उत्तमता के उच्च शिखर पर तब तक नहीं पहुंच सकती, जब तक जनता की मातृभाषा अपने उचित स्थान पर शिक्षा के माध्यम तथा सर्वसाधारण के व्यवहार के रूप में स्थापित न की जाए।"

1947 में अंग्रेजों से आजादी हासिल करने के बाद, नए भारतीय राष्ट्र के नेताओं ने एक आम, सार्वभौमिक भाषा के साथ भारत के कई क्षेत्रों को एकजुट करने का अवसर पहचाना। महात्मा गांधी ने महसूस किया कि भारत के उभरने के लिए यह आवश्यक कदम होगा।

आजादी के बाद, भारत एक सार्वभौमिक संपन्न राष्ट्र बन गया और इसका उद्देश्य यह था कि अंग्रेजी को धीरे–धीरे प्रशासन की भाषा के रूप में चरणबद्ध ढंग से विलोपित किया जाए और उसकी जगह सब से व्यापक बोली जाने वाली भाषा, स्पष्ट प्रतीत हो रही थी, को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया जाए।

भारत के निर्माण में हिंदी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। दरअसल, हिंदी के प्रसार और विकास की ताकत उसके मिश्र स्वभाव में छिपी हुई है। जब हिंदी संस्कृत की तत्सम शब्दावली से सजती–संवरती है तो वह प्रबुद्ध समाज की जुबान बनती है, उर्दू के साथ रच–बस कर संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में बोली–समझी और देसी भाषाओं तथा बोलियों के शब्दों को अपना कर देश–दुनिया के सुदूर क्षेत्रों में जानी–पहचानी जाती है। हिंदी का यह स्वभाव ही उसे एक व्यापक और वैश्विक भूमिका में ला खड़ा करता है।

स्वाभाविक ही भारतीय बाजार की भूमिका बड़ी हो गई है। वैश्वीकरण के दौर में भारतीय बाजार की ताकत जैसे–जैसे बढ़ेगी, भारतीय भाषाओं और हिंदी की भूमिका व्यापक होगी। वर्तमान कॉरपोरेट में औद्योगिक उत्पाद, उपभोक्ता, बाजार और टेक्नोलॉजी का सर्व नया संबंध बना रहा है। इसमें सब कुछ बहुराष्ट्रीय है। पर इसकी जुबान वही है, जो हमारी–आपकी जुबान है। यानी वैश्वीकरण के दौर में हमारे बीच जो चीजें बिक रही हैं वे भले दुनिया के किसी भी हिस्से का उत्पाद हों, पर हमारी भाषा में ही बिक रही हैं।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी का फैलाव लिपि के स्तर पर भी दिख रहा है। देश में विज्ञापनी भाषा में हिंदी का बढ़ता प्रयोग इसका उदाहरण है। वैश्वीकरण के बाद हुए भाषाई विस्तार से हिंदी में भारतीय भाषाओं के शब्द ही नहीं आए, बल्कि इसका फैलाव अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अप्रवासियों और विदेशियों की बोली में देखा जा सकता है। मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, जमैका, टोबैगो और गुयाना आदि देशो में करीब पचास फीसद लोग हिंदी का प्रयोग करते हैं। हिंदी के सैकड़ो शब्द मॉरीशस की क्रियोल में हैं। अमेरिका, कनाडा जैसे देशों में अप्रवासियों की बड़ी आबादी कुछ अलग प्रकार की हिंदी बोलती है। वहां के हिंदी रेडियो कार्यक्रमों में भारतीय रेडियो कार्यक्रमों से ज्यादा गुणवत्ता नजर आती है।

हिंदी के वैश्विक स्वरूप को संचार माध्यमों में भी देखा जा सकता है। संचार माध्यमों ने हिंदी के वैश्विक रूप को पढ़ने में पर्याप्त योगदान दिया है। भाषाएं संस्कृति की वाहक होती हैं और संचार माध्यमों पर प्रसारित कार्यक्रमों से समाज के बदलते सच को हिंदी के बहाने ही उजागर किया गया।

राष्ट्र निर्माण में भाषा की भूमिका की बात पर विश्लेषण करें तो निम्न निष्कर्ष सामने आते हैं–

1. वास्तव में हिंदी की यह प्रकृति ही देश की एकता की परिचायक है और इस प्रकृति ने ही उसे इतना व्यापक रूप दिया है। वह केवल हिन्दुओं या कुछ मुट्ठी–भर लोगों की भाषा नहीं है। वह तो देश के कोटि–कोटि कंठों की पुकार और उनका हृदयहार है। हिंदी के सूत्र के सहारे कोई भी व्यक्ति देश के एक कोने से चलकर दूसरे कोने तक जा सकता है और अपना काम चला सकता है। देश में फैली हुई अनेक भाषाओं और संस्कृतियों के बीच यदि भारतीय जीवन की उदात्तता एवं एकात्मकता किसी एक भाषा में दिखाई देती है तो वह हिंदी में ही है। चाहे सब लोग हिंदी न जानते हों, लेकिन फिर भी इसके द्वारा वे अपना काम चला लेते हैं और उन्हें इसमें कोई कठिनाई नहीं होती।

2. हिंदी अपने उद्भव काल से ही विभिन्न प्रदेशों की संपर्क भाषा के रूप में प्रयुक्त होने लगी थी। मुगल शासन के दिनों में फारसी बेशक राजभाषा बनी रही, किंतु शासकों के महलों में हिंदी ही बोलचाल की भाषा थी। डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार अकबर के महल में बोलचाल की भाषा हिंदी थी।

3. अमीर खुसरो तुर्क थे, लेकिन लिखते थे फारसी और हिंदी में। उन्हें हिंदी से बेहद प्रेम था, उन्होंने लिखाः

   मैं हिन्दुस्तान की तूती हूं।

   अगर तुम कुछ पूछना चाहते हो तो हिंदी में पूछो, मैं तुम्हें अनुपम बातें बता सकूंगा।

4. कबीर का महावाक्य हैः

   भाखा बहता नीर।

5. तुलसीदास का विनम्र निवेदन है–

   भाषा भनति मोर मति थारी।

यह भाषा की महत्ता को स्व प्रतिपादित करता है।

हिंदी अपने जन्म से, प्रकृति से, अपनी आंतरिक शक्ति के सहारे भारत की सार्वदेशिक भाषा के रूप में और सामासिक संस्कृति की वाहिका बनकर विकसित और समृद्ध हुई है। विद्वानों की मान्यता है कि भारतीय जनमानस और जनसंस्कृति को सामासिक रूप में विकसित करने में हिंदी का जो योगदान रहा है वह निश्चित ही अद्वितीय है। हिंदी अखिल भारतीय संस्कृति, साहित्य, दर्शन, धर्म आदि सब कुछ की अभिव्यक्ति की माध्यम ही नहीं बनी, वरन् वह भारतीयता की प्रतीक ही बन गई है।

इस प्रकार हम हिंदी को राष्ट्रीयता का पर्याय मानते हुए कह सकते हैं कि हिंदी भारत की भारती है, हिंदी हिन्दुस्तान की हिंदी है। यह हमारे राष्ट्र निर्माण का मूल सूत्र है।

प्रधान कार्यालय
राजभाषा विभाग

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है
– जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

नराकास उपलब्धियाँ

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति जबलपुर द्वारा हमारी बैंक की शाखा जबलपुर को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। पुरस्कार प्राप्त करते हुए शाखा प्रबंधक।

आँचलिक प्रबंधक–गुरूग्राम, नराकास गुरूग्राम द्वारा प्राप्त चेक सुश्री हरजीत कौर को प्रदत्त कर सम्मानित करते हुए। सुश्री हरजीत कौर ने नराकास के तत्वावधान में आयोजित प्रतियोगिता (चित्र कहानी लेखन) में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया था।

बैंक नराकास, गुरूग्राम द्वारा हमारे बैंक के आँचलिक कार्यालय गुरूग्राम को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। आँचलिक प्रबंधक श्री अमोलक सिंह ने समस्त स्टाफ को राजभाषा शील्ड के लिए बधाई दी।

संगोष्ठी

आँचलिक कार्यलय गुरूग्राम में ''राजभाषा कार्यान्वयन में समस्याएँ तथा समाधान'' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

मोनिका गुप्ता

बैंकों के निजीकरण का अर्थव्यवस्था पर असर

राष्ट्रीयकरण से पहले सभी वाणिज्यिक बैंकों की अलग तथा स्वतंत्र नीतियाँ होती थी और उनका मुख्य उद्देश्य अधिक से अधिक लाभ कमाना होता था क्योंकि इन बैंकों के मालिक गिने चुने पूंजीपति होते थे, जो अपने हितों के साथ अपने निजी हित धारकों को ही बैंकिंग सेवाओं तथा सुविधाओं का लाभ पहुँचाते थे। अतः समाज के गरीब, कमजोर वर्ग तथा सामान्य गरीब लोगों को बैंकों की अधिक जानकारी नहीं होती थी। देश में सामाजिक तथा आर्थिक विकास की गति अवरूद्ध होने लगी जिसके फलस्वरूप नई आर्थिक नीति की जरूरत हुई तब देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने हेतु बैंकों का राष्ट्रीकरण करके उन्हें देश के विकास का उत्तरदायित्व दिया। इसी कारण देश के 14 प्रमुख वाणिज्यिक बैंकों का राष्ट्रीकरण 19 जुलाई 1969 को किया गया। उस वक्त पूरे भारत में कुल शाखाएं 8,200 थीं और ग्रामीण और सेमी अर्बन इलाकों में तो बैंकों की शाखाएँ बहुत ही कम थीं।

आज देश में बैंकों की लगभग 80–90 हजार शाखाएं हैं। बैंकों के राष्ट्रीयकरण के बाद बैंकों की शाखाओं का विस्तार हुआ और कृषि ऋण बैंकों की परिभाषा में शामिल हो गया। बैंकों ने पाँच रुपये की पूंजी रखने वालों का भी खाता खोलना शुरू किया, कम ब्याज दर पर छोटे उद्योगों को ऋण देना शुरु किया और इस तरह बैंकों ने उन सभी तक पहुंचने की कोशिश की जिन्होंने जमाकर्ता या उधारकर्ता के रूप में कभी बैंकों की सेवाएं नहीं ली थी। आर्थिक तौर पर निचले पायदान के लोगों को बैंकों ने एक जमाकर्ता के रूप में सम्मान देना शुरु किया जो बैंकों की बड़ी उपलब्धि थी। इसे आप फाइनेन्शिल इन्क्लूशन का पहला चरण कह सकते हैं। इससे पहले भी कुछ बैंक थे लेकिन वो प्राइवेट क्षेत्र में थे और उनका उद्देश्य केवल लाभ कमाना था।

यहाँ यह बात काफी महत्वपूर्ण है कि सरकारी बैंकों की शाखाएँ दूरदराज की ऐसी जगहों पर भी होती हैं जहां निजी बैंक पहुंचना पसंद नहीं करते।

साथ ही सरकारी बैंक, गांव–देहात में सरकारी मदद या सरकार की योजनाओं का लाभ भी पहुंचाते हैं। ऐसे में इन बैकों पर निर्भर रहने वाले गरीबों के लिए सरकारी बैंकों के निजीकरण के क्या मायने होंगे। क्या इससे उन्हें मिलने वाली सरकारी सुविधाओं पर भी असर नहीं पड़ेगा।

भारत जैसे देश में जो आर्थिक दृष्टि से, शैक्षणिक दृष्टि से, सामाजिक दृष्टि से और इंफ्रास्ट्रक्चर की उपलब्धता की दृष्टि से काफी पीछे है, उसमें ये सोचना कि लाभ ही बैंकों का एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए ये अपने आप में एक बड़ा सवाल है जिसका हमें उत्तर ढूंढना चाहिए।

इसके बावजूद 1991 में भारत में प्राइवेट बैंक आए जिनका एकमात्र उद्देश्य था लाभ कमाना। इन बैंकों में खातों के लिए बड़े मिनिमम बैलेंस की आवश्यकता थी और अब भी है जो आम आदमी के लिए संभव नहीं है।

देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है – रविशंकर शुक्ल

फाइनेन्शियल इन्क्लूशन का दूसरा चरण मौजूदा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की देन है जब उन्होंने जनधन योजना की बात की। इसके तहत जो 25 करोड़ खाते खोले गए उनमें बड़ी भूमिका सरकारी बैंकों की रही। ऐसा कार्य प्राईवेट बैंक नहीं कर सकते थे।

ऐसा नहीं है कि प्राइवेट बैंकों में एनपीए नहीं है। लेकिन ये देखने वाली बात है कि सरकारी बैंकों में एनपीए का कारण उनकी ओनरशिप नहीं बल्कि उनका बिजनेस मॉडल है। भारत में मौजूद 2–3 बैंकों को छोड़ पर अधिकतर बैंक रीटेल लोन ही देते हैं। अगर सरकारी बैंक भी रीटेल लोन पर ही ध्यान देते तो उनका भी एनपीए नहीं होता।

समस्या ये भी है कि हमारे देश में कंपनियों को प्राइवेट बैंक लोन नहीं देंगे क्योंकि उनको सुरक्षित लोन यानी रीटेल लोन करना है तो हमें सरकारी क्षेत्र के बैंकों के एनपीए को इस तरह से देखना चाहिए कि वो एक राष्ट्रीय जरूरतों का पूरा कर रहे हैं जिसकी आगे भी जरूरत पड़ेगी। अब सीधी बात है कि कॉर्पोरेट लोन सरकारी बैंक देंगे तो एनपीए भी तो उन्हीं का होगा। साथ ही ये भी देखें कि जो लंबी अवधि के लोन होते हैं वो आने वाले 10–15 साल के अर्थव्यवस्था के विकास के आंकलन के आधार पर दिए जाते हैं। कभी–कभी बाजार में मंदी आ जाती है।

इंफ्रास्ट्रकचर प्रोजेक्ट्स की बात करें तो अगर बैंक सभी प्रकार की स्वीकृतियां लेने के बाद ही लोन देगा तो प्रोजेक्ट के शुरु होने में काफी वक्त लगता है। कई कारणों से भी परियोजनाएँ रूक जाती हैं और बैंकों का पैसा डूब जाता है। अब चार पांच साल भी अगर पैसा नहीं मिला तो ब्याज मिला कर ऋण की रकम काफी बड़ी हो जाती है। परंतु, जब बैंकों ने, इसके लिए ऋण दिया था, उस वक्त इन सब का इतना आंकलन नहीं होता था। तो ऐसे में लाभ कमा कर बैंक का ऋण चुकाने की ऋण लेने वाले की क्षमता प्रभावित होती है। और चूंकि प्रोजेक्ट पूरा नहीं हुआ तो वो अब कभी ऋण चुका नहीं पाएगा। इस कारण से भी बैंकों का एनपीए अचानक ही बढ़ गया।

भारतीय बैंकिंग प्रणाली मात्र लेन–देन, जमा या ऋण के माध्यम से केवल लाभ अर्जित करने वाला उद्योग ही न रहकर भारतीय समाज के गरीब, दलित वर्गों के सामाजिक तथा आर्थिक पुनःरूत्थान और आर्थिक रूप में उन्हें ऊँचा उठाने का एक सशक्त माध्यम है। कुछ को लगता है कि सरकारी बैंकों का निजीकरण यानी बैंकों को निजी हाथों में दे दिया जाना इस समस्या से निपटने का सही तरीका है। ऐसा बिल्कुल नहीं है।

बैंकों के निजीकरण के बाद बैंकों को कमीशन के आधार पर काम करना होगा। एन.पी.ए. बहुत अधिक बढ़ जाएँगें। जिससे हमारी अर्थव्यवस्था पर बहुत ज्यादा असर होगा। ब्याज देने की दर भी बढ़ जाएगी। लोन और अधिक मंहगें हो जाएंगे। आम आदमी लोन नहीं ले पाएगा। आर्थिक मत–भेद और अधिक हो जाएंगे। इससे सभी बैकों का अधिक लाभ कमाने वाले उद्देश्य की नीति पूरी नहीं हो सकेगी।

अगर कोई दुर्घटना हो जाती है तो उस वक्त बैंकों के निजीकरण की आवाज उठाना बहुत आसान है, हमें 2008 में जो वैश्विक आर्थिक समस्या पैदा हुई थी, उसके कारणों को देखने से पता चलता है कि उस समय के वैश्विक आर्थिक समस्या का कारण कॉर्पोरेट लोन नहीं बल्कि रिटेल लोन, होम लोन और उनके ऊपर के डेरिवेटिव थे, वो सरकारी बैंक नहीं थे बल्कि सभी निजी बैंक ही थे। सरकारी बैंकों को सुधार की जरूरत है। सरकारी बैंकों में कई तरह की समस्या है, सरकारी बैंकों का निजीकरण समस्या को और भी बड़ा कर देगा।

निजीकरण के ऊपर ध्यान ना देकर, हमें यह ध्यान देना चाहिए, कि हम अपनी वर्तमान स्थिति को कैसे सुधार सकते है। इसके लिए सरकार को ही बैंकों तथा ग्राहकों के बीच ताल–मेल रखना होगा।

आँचलिक कार्यालय, दिल्ली – ||

प्रधान कार्यालय में दिनांक 1-14 सितंबर 2020 तक हिंदी पखवाड़े के

जिसमें प्रधान कार्यालय के समस्त स्टाफ़ ने बढ़-चढ़कर सहभागिता

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए
– महावीर प्रसाद द्विवेदी

अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

की। प्रस्तुत है कुछ झलकियाँः-

पीएसबी एलाएंस – डोर स्टेप बैंकिंग (DSB) सेवाएँ ग्राहक के द्वार तक

विकास सिंह

माननीय वित्तमंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण द्वारा दिनांक 9 सितंबर 2020 को यूनिवर्सल टच पॉइंट्स (UTPs) के माध्यम से डोर स्टेप बैंकिंग (DSB) सेवाएँ 9 सितंबर, 2020 को प्रारंभ की गईं। यह सुविधा शुरुआत में देश के 100 केन्द्रों में सभी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा सामूहिक रूप से पीएसबी एलाएंस के नाम से शुरू की गई है।

डोर स्टेप बैंकिंग एक ऐसी सेवा है जिसके तहत ग्राहक डीएसबी एजेंटों के माध्यम से अपने द्वार (घर) तक मामूली शुल्क पर कई बैंकिंग लेनदेन सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। यह बेहतर ग्राहक सुविधा और बैंकिंग शाखा पर निर्भरता कम करने का दोहरा लाभ प्रदान करता है। बैंक सेवा ग्राहकों के सभी वर्गों के लिए लागू किया गया है।

बैंकिंग तंत्र के सुधार के लिए EASE REFORMS के तहत, सभी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक संयुक्त रूप से पीएसबी एलाएंस नाम से एक साथ जुड़े है तथा यह सेवा मुख्यतः 3 यूनिवर्सल टच पॉइंट्स (मोबाइल ऐप, वेब पोर्टल व कॉल सेंटर) के माध्यम से ग्राहकों तक पहुँचाई जाएगी।

डीएसबी सेवाओ की शुरुवात की वजहः

डोर स्टेप बैंकिंग, वित्तीय सेवा विभाग (DFS), वित्त मंत्रालय द्वारा लाए गए EASE (एन्हैंस्ड एक्सेस एंड सर्विस एक्सीलेंस) के तहत बैंकिंग सुधारों के लिए रोड मैप के प्रमुख क्रिया बिंदुओं में से एक है।

एसबीआई, पीएनबी, बीओबी, केनरा बैंक, यूको बैंक और इलाहाबाद बैंक के सदस्यों सहित ग्राहक सुविधा के लिए बैंकिंग पर एक उप–समिति का गठन आईबीए के स्तर पर किया गया था ताकि सभी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के ग्राहकों के लिए डोर स्टेप बैंकिंग सहित सुधारों में तेजी लाई जा सके। आईबीए (IBA) स्तर की इस उप–समिति को सभी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (पंजाब एण्ड सिंध बैंक सहित) की ओर से निर्णय लेने का अधिकार है।

(ग्राहक उत्कृष्टता के लिए देश भर में पहलों की दीर्घकालिक लाइनअप के लिए संरेखित)

A एलाएन्ड फॉर
L लॉंग–टर्म
L लाइनअप ऑफ
I इनिशिएटिव
A ऐक्रोस
N नेशन फॉर
C कस्टमर
E ऐक्सिलैंस

यूको बैंक ने एंकर बैंक होने के नाते सभी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की ओर से यूनिवर्सल टच पॉइंट्स (यूटीपी) के माध्यम से डोर स्टेप बैंकिंग (डीएसबी) के कार्यान्वयन के लिए सेवा प्रदाता के चयन के लिए अनुरोध (RFP) प्रकाशित किया। निविदा (Tender) प्रक्रिया के माध्यम से, मेसर्स अत्याती टेक्नोलॉजीज (प्रा.) लिमिटेड और मैसर्स इंटेग्रा माइक्रो सिस्टम (प्रा.) लिमिटेड L1 और L2 बोलीदाताओं के रूप में उभर कर आए।

दिनांक 08.11.2019 को आईबीए, मुंबई में विक्रेताओं (Vendors) और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (पंजाब एण्ड सिंध बैंक सहित) के बीच मास्टर सेवा समझौते को निष्पादित किया गया। मास्टर सेवा समझौते में व्यक्तिगत बैंक और विक्रेता के बीच विवाद/मध्यस्थता से निपटने का प्रावधान है।

ग्राहक सुविधा के लिए बैंकिंग पर आईबीए की उप समिति ने 60 केंद्रों में काम करने के लिए मैसर्स अत्याती टेक्नोलॉजीज (प्रा.) लिमिटेड के चयन और 40 केंद्रों में काम करने के लिए मैसर्स इंटेग्रा माइक्रो सिस्टम्स (प्रा.) लिमिटेड को मंजूरी दी है।

बच्चों को शिक्षित करना तो जरूरी है ही, उन्हें अपने आप को शिक्षित करने के लिए छोड़ देना भी उतना ही जरूरी है – अर्नेस्ट डिमनेट

यूटीपी के माध्यम से ग्राहक तक पहुंचने का तरीका:

दोनों वेंडरों के पास अपना मोबाइल ऐप, ग्राहक वेब पोर्टल और कॉल सेंटर है। ग्राहक वेब पोर्टल और मोबाइल ऐप के माध्यम से डीएसबी सेवा अनुरोधों/शिकायतों को दर्ज और ट्रैक कर सकता है। वेब पोर्टल और मोबाइल एप्लिकेशन के लिए लिंक:

(क) मैसर्स अत्याती टेक्नोलॉजीज (पी) लिमिटेड–

ग्राहक वेब पोर्टल:https://doorstepbanks.com/

ग्राहक मोबाइल एप्लिकेशन: Google Play Store से 'Doorstep Banking' [अत्याती टेक्नोलॉजीज (प्रा.) लिमिटेड द्वारा] नाम से एप्लिकेशन डाउनलोड किया जा सकता है।

ग्राहक सेवा टोल फ्री नंबर: 1800 103 7188

सहायता ईमेल आईडी:support.dsb@atyati.com

(ख) मैसर्स इंटेग्रा माइक्रो सिस्टम्स (पी) लिमिटेड–

ग्राहक वेब पोर्टल: https://dsb.imfast.co.in/doorstep/login

ग्राहक मोबाइल एप्लिकेशन: गूगल प्ले स्टोर से 'Doorstep Banking' [इंटेग्रा माइक्रो सिस्टम द्वारा] नाम से एप्लिकेशन डाउनलोड किया जा सकता है।

ग्राहक सेवा टोल फ्री नंबर: 1800 121 3721

सहायता ईमेल आईडी: dsb.support@integramicro.com

बैंक शाखा की जिम्मेदारी:

मैसर्स अत्याती टेक्नोलॉजीज (पी) लिमिटेड के तहत शाखा के लिए शाखा वेब पोर्टल लिंक: https://branch.doorstepbanks.com

मैसर्स इंटेग्रा माइक्रो सिस्टम्स (पी) लिमिटेड के तहत शाखा के लिए शाखा वेब पोर्टल लिंक: https://dsb.imfast.co.in/doorstep/portallogin

1. बैंक कर्मचारी पहले अनुरोध की सत्यता को सत्यापित करेगा यानी बैंक के दिशानिर्देशों के अनुसार मांगा गया दस्तावेज ग्राहक को दिया जा सकता है या नहीं।

2. बैंक कर्मचारी, सेवा अनुरोध पर काम करेगा और जब कोई एजेंट पिक अप के लिए सेवा अनुरोध तैयार होगा तो बैंक कर्मचारी को पोर्टल में ही इसकी पुष्टि करनी होगी।

3. प्री सर्विस रिक्वेस्ट में, शाखा कर्मचारी डीएसबी एजेंट (प्राधिकरण–कोड के सफल सत्यापन के बाद) को उपकरण सौंप देगा।

4. पिकअप सेवा अनुरोध में, शाखा कर्मचारी एजेंट की उपस्थिति में यह सत्यापित करने के लिए लिफ़ाफ़ा खोलेगा कि दस्तावेज क्षतिग्रस्त तो नहीं किए गए हैं। यदि यह कटा फटा है, तो शाखा कर्मचारी के पास इसे पोर्टल मे अंकित करने का विकल्प होगा।

5. शाखा कर्मचारी को अनुरोध प्राप्त करने के 1 घंटे के भीतर पोर्टल में प्रसंस्करण पूरा करना होगा। उसके पश्चात डीएसबी एजेंट शाखा में आकर उपकरण लेगा और ग्राहक तक पहुंचाएगा। इस तरह वितरण सेवा पूर्ण हो जाएगी।

डीएसबी के अंतर्गत आने वाली सेवाओं का प्रकार:

प्रथम चरण में, केवल गैर–वित्तीय लेन–देन का उठाना (Pick up) और वितरण (Delivery) किया जाएगा।

1. **गैर–वित्तीय**

   (क) **पिकअप सेवा** (ग्राहक से बैंक शाखा तक): एजेंट पिकअप सेवा के रूप में निम्नलिखित मदों को पिक करेगा–चेक (Cheques), ड्राफ्ट/पे ऑर्डर (draft/Pay Order),नई चेक बुक के लिए आवेदन (यह सेवा व्यक्तिगत चेक बुक के लिए है जो सीधे बैंक द्वारा पोस्ट के माध्यम से ग्राहक को दी जाएगी), 15G/15H फॉर्म, आईटी/जीएसटी चालान और स्थायी निर्देश (Standing Instructions)।

   (ख) **वितरण सेवाएँ** (बैंक शाखा से ग्राहक तक): एजेंट डिलीवरी सेवा के रूप में निम्नलिखित वस्तुएँ वितरित करेगा –गैर–निजीकृत चेक बुक्स (Non-Personalised Cheque Books), ड्राफ्ट/पे–ऑर्डर, सावधि जमा रसीद/अभिस्वीकृति, टीडीएस/फॉर्म 16 प्रमाण पत्र और खाता विवरण (Account Statement)।

2. **वित्तीय सेवा**

   (क) नकद निकासी, डेबिट कार्ड/आधार के द्वारा लेनदेन।
   (ख) नकद जमा (डेबिट कार्ड/आधार के द्वारा)

3. **अन्य सेवाएं**

   डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र: पेंशनभोगी ग्राहक इस सुविधा के तहत अपना जीवन प्रमाण–पत्र अपने घर से ही बैंक को दे सकते हैं।

सेवाक्षेत्र और समयः

हर बैंकिंग एजेंट का सेवा क्षेत्र, क्षेत्र की पहुँच के आधार पर 5–10 कि.मी. के दायरे मे होगा। किसी भी कार्य दिवस पर अपराह्न 3:00 बजे तक किए गए सभी अनुरोधों को अनुरोध उत्पन्न होने के 3 घंटे के भीतर पूरा किया जाना चाहिए और उसके बाद या छुट्टी के बाद उत्पन्न अनुरोध प्राथमिकता के आधार पर पूरा किया जाना चाहिए और अगले कार्य दिवस दोपहर 1:00 बजे तक पूरा हो जाएगा ऐसा सुनिश्चित किया गया है।

ग्राहकों से वसूले जाने वाले सेवा शुल्कः

आईबीए उप–समिति ने प्रत्येक सेवा अनुरोध के लिए ग्राहकों से रु. 75/–(रूपए पचहत्तर केवल+जीएसटी) लेने का एक समान सेवा शुल्क तय किया है।

वेंडर की जवाबदारी तथा जिम्मेदारीः

वेंडर को सभी आवश्यक संसाधन जैसे प्रशिक्षित कार्यबल, हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर, एप्लिकेशन आदि की व्यवस्था सुनिश्चित करनी है। उपरोक्त सेवाओं को प्रदान करने के लिए आरबीआई और अन्य सांविधिक निकायों के दिशा–निर्देशों का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित किया गया है।

वेंडर ओपैक्स मॉडल पर यूटीपी सेवाओं के माध्यम से डोर स्टेप बैंकिंग सेवाओं के कार्यान्वयन के लिए एजेंट (बैंक की ओर से बैंक एजेंट) प्रदान करेंगे। आवश्यक बुनियादी ढाँचा, एजेंट की नियुक्ति, हैंड हेल्ड डिवाइसेज/मोबाइल डिवाइस, ऐप, वेब पोर्टल, ग्राहक सेवा केंद्र आदि वेंडरों द्वारा उपलब्ध कराए जाएंगे।

डीएसबी सेवा की शुरुआत हुए लगभग महीना बीत गया है और ग्राहकों का सेवा के प्रति उत्साह संतोषदायक है। यह सुविधा ग्राहको द्वारा पसंद की जा रही है और कोरोना काल मे लोग इसका इस्तेमाल बढ़ा रहे है। डीएसबी सेवा धीरे–धीरे पूरे देश मे भी लागू होने की आशा है। निकट भविष्य मे डीएसबी सेवा बैंकिंग क्षेत्र मे मिल का पत्थर साबित होगी ऐसा पूर्ण विश्वास है।

प्रधान कार्यालय, योजना विकास विभाग

ग्राहक के मुख से

महोदय,

आज के समय में बैंकिंग व्यवहार और उपभोक्ताओं की जरूरतों में परिवर्तन से परंपरागत बैंकिंग का दौर खत्म हो चुका है और बैंकलेस बैंकिग का अवधारणा को मजबूत हुई है। आज तकनीक ने बैंकों का स्वरूप को एकदम बदल दिया है। इसमें बिग डेटा, क्लाउड कंप्यूटिंग, स्मार्टफोन और ऐसे अन्य नवाचार शामिल हैं। मोबाईल बैंकिंग के आने से तो ग्राहकों और बैंक के बीच संवाद के तरीके में बहुत बदलाव आ गया है इसी प्रकार एटीएम मशीनों ने बैंकिंग व्यवस्था को बहुत हद तक सरल, सुरक्षित और सुविधाजनक बना दिया है। परंतु परंपरागत बैंकिंग के दौर में खाताधारक बैंक से व बैंक स्टाफ से भावनात्मक रूप से जुड़ाव रखते थे। कुछ ऐसा ही जुडाव हमारा पंजाब एण्ड सिंध बैंक, शाखा – सिद्धार्थ एंक्लेव नई दिल्ली से सन् 1983 से है। शुरूआत एनआरआई खाता खुलवाने से हुई। उसके बाद जैसे–जैसे हमारा व्यापार बढ़ा वैसे–वैसे ही हमारा बैंक के साथ विश्वास बढ़ता गया। सभी स्टाफ से हमारे मधुर रिश्ते रहे। आज हमनें अपने परिवारजनों के 20 से भी ज्यादा खाते इस शाखा में खुलवा रखे है। हमारी 4–5 व्यवसायिक फर्मों के खाते भी इसी शाखा में है। जैसे कि आर.आर. फाइनेंशियल सर्विसेज, कनु एस्टेट आदि। हमनें शाखा से कई तरह के लोन भी लिए है जैसे कि – संपत्ति के विरुद्ध ऋण, शिक्षा ऋण आदि। ये सब सुचारू रूप से चल रहे है। हमारे परिवार की करोड़ों की एफ.डी. इस शाखा में ही है। हमारे बैंक से आज भी 1983 जैसा ही अच्छा रिश्ता है। समय–समय पर स्टाफ बदलता रहा लेकिन शाखा के प्रभारी एवं स्टाफ से हमें हमेशा सहयोग मिलता रहा है।

मैं बैंक व बैंक कर्मचारियों का तहेदिल से आभार व्यक्त करता हुआ कामना करता हूँ कि बैंक लगातार सफलता के नए सोपान प्राप्त करते हुए तरक्की करें।

हरीश कुमार भार्गव

शिक्षा जीवन की तैयारी का शिक्षण काल है – विल्मट

पत्रिका का गौरव

संदीप आर्य
निदेशक (तकनीकी/कार्यान्वयन/प्रशासन)
दूरभाष : 23438129
ई-मेल : dir-tech@nic.in

सत्यमेव जयते

गृह मंत्रालय
भारत सरकार
एन.डी.सी.सी.-II बिल्डिंग,
जय सिंह रोड, नई दिल्ली-110001
MINISTRY OF HOME AFFAIRS
GOVERNMENT OF INDIA
NDCC-II BUILDING,
JAI SINGH ROAD, NEW DELHI-110001

फाइल सं.12024/04/2018-रा.भा.(का.2) दिनांक: 14 अक्तूबर, 2020

आपका पत्र सं रा.अंकुर/20-21 एवं पत्रिका " **राजभाषा अंकुर** " का अंक जून 2020 प्राप्त हुआ । धन्यवाद ।

किसी भी कार्यालय की गृह पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य पाठकों के बीच सूचना और जानकारी पहुंचाना तथा कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में सृजनात्मक क्षमता का विकास करना होता है । यह कार्य को पी.एण्ड एस. बैंक की त्रैमासिक पत्रिका " **राजभाषा अंकुर** " सफलतापूर्वक कर रही है ।

पत्रिका में शामिल कोरोना महामारी से संबंधित लेख तथा अन्य सभी सूचनाप्रद लेख उच्च कोटि के हैं । प्रादेशिक भाषाओं के प्रचार-प्रसार की दिशा में पंजाबी भाषा की रचना को हिंदी प्रारूप के साथ प्रकाशित किया है, जो प्रशंसनीय कार्य है । पत्रिका में प्रकाशित अन्य सूचनाप्रद तथा कार्यालय की गतिविधियों के संबंध में जानकारी भी पाठकों को आकर्षक चित्रों के माध्यम से उपलब्ध कराई गई है । कृपया " **राजभाषा अंकुर** " को राजभाषा विभाग की वेबसाईट पर ई-पत्रिका पुस्तकालय में अपलोड भी करवाएं ।

पत्रिका के नियमित और सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

शुभेच्छु

संदीप

(संदीप आर्य)

सेवा में,

श्री एस.हरिशंकर
प्रबंध निदेशक एवं
मुख्य कार्यकारी अधिकारी
बैंक हाउस, प्रथम तल
21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली 110008

बैंक के विभिन्न आँचलिक कार्यालयों में हिंदी

आँचलिक कार्यालय, मुम्बई

आँचलिक कार्यालय, पंचकूला

आँचलिक कार्यालय, गुरूग्राम

आँचलिक कार्यालय, गुरदासपुर

आँचलिक कार्यालय, चैन्ने

आँचलिक कार्यालय, गाँधीनगर

आँचलिक कार्यालय, दिल्ली – 2

सहभागी

विद्या अमूल्य और अनश्वर धन है – ग्लैडस्टन

पखवाड़े तथा हिंदी दिवस का आयोजन

आँचलिक कार्यालय, दिल्ली–I

आँचलिक कार्यालय, होशियारपुर

आँचलिक कार्यालय, लुधियाना

आँचलिक कार्यालय, नोएडा

आँचलिक कार्यालय, कोलकाता

सहभागी

आँचलिक कार्यालय, बरेली

कार्टून कोना

प्रदीप राय, सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक

जरा सोचिए..........................!

देवेन्द्र कुमार

व्यक्ति कितना भी जानकार क्यों न हो, नए शहर के प्रति मन में सदैव एक संशय बना रहता है। नौकरी का पत्र मिला था कि भोपाल ज्वाइन करना है। मैं पहली बार भोपाल जा रहा था। ट्रेन गंतव्य पर पहुंचने वाली थी, मैंने एक सहयात्री से मेरे भावी ऑफिस का पता पूछा, उसका भी ऑफिस हमारे अंचल कार्यालय के पास ही था। वह सहयात्री रोज ट्रेन से इटारसी से भोपाल आना–जाना करता था।

सहयात्री ने हमारे कार्यालय का पता तो बताया लेकिन उसे लगा कि मैं उसकी बात ठीक से समझ नहीं पा रहा हूँ इसलिए उसने मुझे हमारे कार्यालय तक छोड़ने का निश्चय किया। सहयात्री ने कहा कि मैं भी उसी रास्ते से जाऊंगा, वैसे तो मैं रोज पैदल जाता हूं लेकिन आपके पास समान है इसलिए अभी हम बस से चलेंगे। उसके बाद हम चल पड़े। बस में पाँच रुपये की टिकट थी, मेरे बहुत मना करने पर भी टिकट के पैसे उन्होंने ही दिए। बस से उतरकर 500 मीटर की दूरी पर ही हमारा ऑफिस था फिर भी वह मुझे वहाँ तक छोड़ने गया। मैंने हृदय की गहराइयों से उनका धन्यवाद किया, इसके बाद वह अपने गंतव्य की ओर चले गए।

उनके जाने के बाद मैं बहुत देर तक सोचता रहा कि इस अनदेखे शहर में यदि वह व्यक्ति इस तरह से मेरी सहायता नहीं करता है तो मुझे कितनी परेशानी होती? उस व्यक्ति के इस प्रकार मदद करने के बाद वह अनदेखा शहर मुझे अपना सा लगने लगा। यदि हम लोग भी अपना नैतिक कर्तव्य समझकर अपने शहर में कहीं बाहर से आए हुए लोगों का मार्गदर्शन करें तो अनजाने शहर के प्रति लोगों के मन में अनायास ही स्नेह उमड़ आएगा। मैंने तो सोच लिया है कि यदि कोई व्यक्ति मुझसे किसी जगह का पता पूछता है तो मैं उसे न केवल उस जगह का पता बताऊंगा बल्कि संभव हुआ तो उसे वहाँ तक छोड़ कर भी आऊंगा जिससे मेरे शहर जहां मैं रह रहा हूँ, उसकी अलग पहचान बने। हो सके तो आप भी इस बारे में जरूर सोचिए......................!

प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग

विनोद कुमार

रावण जिंदा है

गरीब भोला गाँव की बंजर जमीन छोड़ अपनी पत्नी शीला और दो छोटे बच्चों के साथ रोजी–रोटी और बेहतर जीवन की तलाश में महानगर मुंबई की तरफ चल पड़ता है। एक पुराने मित्र के यहाँ कम से कम एक सप्ताह तक रहता है और अपने लिए काम की तलाश करता है और फिर उसी मित्र की सहायता से उसे एक ठेकेदार के यहाँ मजदूरी का काम भी मिल जाता है। ये काम एक बहुमंजिला इमारत का था जो अभी शुरू हुआ है अतः भोला को लगता है कि उसके कम से कम चार या पांच साल आराम से कट जाएंगे इस बीच वो और शीला मिलकर अच्छा कमा लेंगे और बच्चों का एडमिशन किसी अच्छे स्कूल मे करवा देंगे। यही अरमान लिए भोला ठेकेदार के पास उम्मीद लिए पहुँच जाता है, ठेकेदार द्वारा दिया काम भोला सहर्ष स्वीकार कर लेता है और शीला के लिए भी काम की बात करता है। घर आकर शीला को खुशखबरी देता है, अगले सप्ताह अपने मित्र की मदद से उसे एक खोली भी मिल जाती है। भोला को काम करते लगभग दो माह बीत चुके है, अब वो अपने परिवार के साथ प्रसन्न है, ठेकेदार उसके काम से खुश है परन्तु शीला को अक्सर डाँट–फटकार लगाता रहता है। शीला वहां काम करके उतनी खुश नहीं है लेकिन भोला उसे हिम्मत बंधाता रहता है।

दिन बीत रहे थी कि एक दिन 28 वर्षीय भोला को बुखार ने आ घेरा, भोला काम पर नहीं जा पाया। शीला ने ठेकेदार को उसके अस्वस्थ होने की खबर दी और काम करने लगी मगर मन घर पर भोला और बच्चों के बीच मे ही टिका हुआ था, आधे दिन के बाद उसने ठेकेदार से घर जाने के लिए छुट्टी मांगी : उसकी परेशानी देख ठेकेदार उसे स्वयं घर तक पहुंचाने गया और रास्ते में से भोला के लिए कुछ दवाइयाँ भी लेता गया। शीला उसकी इस भलाई से मन ही मन बहुत प्रसन्न हुई। उसे याद आया गाँव का जमींदार जो किसी एक के बीमार हो जाने पर पूरे परिवार से उसके हिस्से का काम करवाता था। उसे जमींदार बहुत ही निर्दयी और क्रूर लगने लगा। इन्ही विचारों मे उलझी वो ठेकेदार के साथ अपनी खोली पर पहुँची जहाँ पर तेज बुखार मे तपता हुआ भोला एक तरफ बिस्तर बिछाए लेटा हुआ था तो दूसरी ओर दो छोटे बच्चे जिनकी उम्र लगभग 8 साल और 6 साल के करीब होगी किसी खेल मे व्यस्त थे, शीला को देखते ही भाग कर उसके पास आ गए तथा कुछ खाने की जिद करने लगे ये देख ठेकेदार बाहर गया और फल वाले से कुछ केले लाकर उन्हें दे दिए इसके बाद उसने भोला की ओर देखा और उसे दवाई देकर खाना खा कर आराम करने के लिए कह कर वापिस लौट गया। भोला और शीला दोनों ही ठेकेदार के बहुत आभारी हो रहे थे।

भोला तीन दिन की खुराक खाने के बाद कुछ स्वस्थ महसूस कर रहा था परन्तु पूरा शरीर कमजोरी के कारण दर्द कर रहा था इसलिए वो काम पर जाने के लिए असमर्थ था, उधर तीन दिन के बाद ठेकेदार ने हर रोज उसके बारे मे पूछना शुरू कर दिया और उसके ना पहुँचने पर वो उसके हिस्से का काम भी शीला से करवाता। शीला देर रात गए घर पहुँचती खाना बनाकर सोए हुए बच्चों को जगाकर खिलाती। फिर एक दिन ठेकेदार घर आया उसने भोला का हाल जाना तथा उसने भोला को एक पुड़िया खाने के लिए दी। अगले दिन भोला खुद को एकदम बेहतर और स्वस्थ महसूस करने लगा, वो काम पर जाने लगा और पहले से भी अधिक जोश से काम करने लगा।

भोला लगभग इसी तरह हर रोज काम पर आता चुपके से ठेकेदार से पुड़िया लेता और काम पर जुट जाता इसी तरह दस दिन बीत गए। अब कुछ दिनों से ठेकेदार ने उसे पुड़िया देना कम कर दिया था भोला का शरीर कमजोर पड़ने लगा वो ठेकेदार से बहुत मिन्नत करके पुड़िया लेता और जी तोड़ मेहनत करता। इसी तरह से महीना पूरा हो गया और सभी को पगार मिल गई परन्तु भोला की पगार का एक तिहाई हिस्सा कट चुका था उसके पूछने पर ठेकेदार ने बहुत बेरुखी से कहा कि ये जो तुम्हारे घर फल दवाइयाँ आती थीं ये सब मुफ्त मे आता है क्या और ये जो हर रोज कि दवाई कि पुड़िया जो तुम खाते हो जानते हो इसकी कीमत कितनी है। ये सब सुनकर भोला की आँखों से आंसू बहने लगे। बची पगार लेकर वो घर की तरफ चल दिया। अगले दो दिन भोला बहुत उदास रहा उसे कुछ समझ मे नहीं आ रहा था, पुड़िया खाये बिना उससे काम नहीं हो रहा था वो ठेकेदार के पास जाकर खूब रोया। ठेकेदार ने उसे सहानुभूति जताते हुए कहा देखो भोला मै जानता हूँ कि दवाई लिए बिना तुम कमजोर होते जा रहे हो परन्तु मैं भी बहुत मजबूर हूँ, ये दवा है ही इतनी महंगी, मै भी हर रोज तुम्हारे लिए इसे नहीं खरीद सकता। भोला आँखों में निराशा और चेहरे पर उदासी लिए ठेकेदार की ओर देख रहा था। फिर उसने रो–रो कर ठेकेदार को अपनी व्यथा सुनानी शुरू की–भोला हाथ जोड़ते हुए कह रहा था ''ठेकेदार साहेब गाँव के जमींदारों से तंग आकर में ये सपना लेकर शहर आया था कि खूब मेहनत करूँगा फिर मै और शीला मिलकर अपने बच्चों को किसी अच्छे स्कूल में पढ़ाकर उनका जीवन संवारेगें ताकि उन्हें भी हमारी तरह ठोकरें ना खानी पड़े, परन्तु इतने पैसों से क्या होगा साहब''–भोला ने अपने आँसू पोंछते हुए जाने के लिए अपना थैला उठाया परन्तु ठेकेदार ने उसे रुकने के लिए कहा, और अपने ऑफिस के भीतर जाकर उसे एक पुड़िया ला कर दे दी। दवा खाने के बाद भोला प्रसन्न हो ठेकेदार के आगे हाथ जोड़ने लगा परन्तु ठेकेदार ने उसे समझाते हुए कहा, ''देखो भोला जीवन मे कभी भी निराश नहीं होना चाहिए सभी मुश्किलों का हल जरूर निकलता है, मेरा एक मशवरा है अगर तुम्हे सही लगे तो इस पर गौर करना, देखो तुम और शीला तो काम कर ही रहे हो और पगार तो सिर्फ तुम्हारी कट रही है शीला की तो नहीं, शीला से कहना कि यहाँ से छूटने के बाद मेरे घर का काम–काज कर दिया करे और खाना बना दिया करे – इस तरह से उसे जो अलग से पगार मिलेगी उससे तुम लोगों की मदद भी हो जाएगी और तुम्हारे कटे हुए पैसे भी पूरे हो जायेंगे और रही बात बच्चों की तो उनके स्कूल खुलने में अभी देरी है तो तब तक के लिए मै उन्हें एक पास की फैक्ट्री मे उनकी उम्र के हिसाब से कुछ काम दिला देता हूँ जिससे उनकी स्कूल की फीस के पैसे भी जमा हो जाएंगे और तुम्हारे सर पर अधिक भार नहीं रहेगा – अगर ये सही लगे तो बता देना – अच्छा अब मैं चलता हूँ। ठेकेदार चला गया और भोला मन ही मन ठेकेदार की तारीफ करने लगा। जब उसने शीला से इस बारे मे बात की तो वो नहीं मानी – बच्चों के लिए तो बिलकुल भी नहीं।

सप्ताह भर नाराज रही मगर फिर भोला की जिद्द के आगे झुक गई। अब बच्चे पास की एक गत्ता फैक्ट्री मे काम करते है, शीला दिनभर की थकी मांदी शाम को ठेकेदार के घर पर काम करती है। दिन इसी तरह से बीत रहे थे, बरसात का मौसम शुरू हो चुका था गर्मी की उमस अब ठंडे झोकों मे बदल रही थी। शाम के लगभग सात बज रहे थे शीला जल्दी–जल्दी ठेकेदार का काम निपटाकर बच्चो के पास घर जाना चाहती थी, इतने में दरवाजे पर दस्तक हुई शीला ने दरवाजा खोला सामने ठेकेदार खड़ा था नशीली आँखों मे लाल डोरे तैर रहे थे, वो अंदर आकर सोफे पर बैठ गया और शीला रसोई का काम निपटाने के लिए अंदर चली गयी। तेज बारिश और हवाओं के कारण लाइट चली गयी थी, शीला ने पास रखी मोमबत्ती को जैसे ही जलाया तो उसे अपने बहुत करीब ठेकेदार के होने का एहसास हुआ, वो उसके कुछ ज्यादा ही करीब था। शीला ने हाथ जोड़ते हुए उससे बिनती की –''जाने दीजिये साहेब हम गरीब लोग अपनी इज्ज़त का सौदा नहीं किया करते ''ठेकेदार ने मुस्कराकर जवाब दिया'' तो हम कहाँ तुम्हारी इज्जत का दाम दे रहे है। हम ड्राइंग रूम मे बैठे है दो कप चाय बनाकर लाइए। ''शीला ने जल्दी से चाय का पानी चढ़ाया परन्तु वो सोच रही थी कि 'ये तो अकेला है फिर दो कप क्यों 'खैर मुझे क्या इतना सोचकर वो दो कप चाय लेकर ड्राइंग रूम मे चली गयी। ठेकेदार किसी पत्रिका के पन्ने पलट रहा था चाय की ओर देखकर बोला, ''सिर्फ चाय साथ में कुछ खाने को भी लाओ ''शीला झट से अंदर गयी और कुछ बिस्कुट तथा नमकीन ले आयी। ये सब टेबल पर रख वो बाहर जाने के लिए

चुनाव जनता को राजनीतिक शिक्षा देने का विश्वविद्यालय है – जवाहरलाल नेहरू

मुड़ी परन्तु ठेकेदार ने कहा, ''लगता है आप मुझसे नाराज हो गयी सच कहता हूँ मैं तो यूँ ही किचन में चला आया था मेरा आपको नुक्सान पहुंचाने का कोई इरादा नहीं है, कृपया आप बैठिए और ये चाय खत्म कर के जाइये वरना मुझे बहुत बुरा लगेगा। ''शीला मन ही मन अपनी सोच पर शर्मिंदा हुई और वही जमीन पर बैठकर चाय पीने लगी। जब उसकी आँख खुली तो सुबह के पाँच बज रहे थे, वो अपने अस्त–व्यस्त कपड़ों के साथ जमीन पर लेटी थी पास ही मेज पर रखी चाय अपना काम कर चुकी थी आस–पास कोई नहीं था। वो हड़बड़ा कर उठी और बेतहाशा अपने झोपड़े की ओर भाग खड़ी हुई। भोला और बच्चे गहरी नींद सो रहे थे, वो नल खोलकर उसके नीचे बैठ कर अपने नसीब को रोती रही। फिर स्वयं ही आँसू पोंछ कर उठी और कपड़े बदल कर बच्चों के साथ सो गयी। आज इतवार था इसलिए किसी को भी काम पर नहीं जाना था उसे गहरी नींद आ गयी जब आँख खुली तो सूरज सर पर चढ़ आया था, भोला हाथ में चाय का गर्मागर्म प्याला लिए उसे जगा रहा था। बिना कुछ कहे उसने चुपचाप चाय पी और घर के अन्य कामों में जुट गयी। अगले दिन वो काम पर नहीं गयी उसकी तबियत बहुत खराब थी घर का काम निपटा कर वो पूरा दिन सोती रही। इसी तरह पूरा एक सप्ताह बीत गया शीला का काम पर जाने का मन ही नहीं कर रहा था भोला के पूछने पर वो अपनी तबियत खराब बता रही थी। उधर ठेकेदार लगातार शीला के बारे में पूछ रहा था आज तो उसने उसे काम से निकालने की धमकी तक दे डाली परन्तु भोला के गिड़गिड़ाने पर और शीला को वापिस काम पर लाने के आश्वासन के साथ मान गया। भोला जान नहीं पा रहा था कि आखिर शीला को हुआ क्या है? उसने अपनी मन की व्यथा ठेकेदार के सामने व्यक्त की। ठेकेदार ने कुछ सोचा और फिर भोला से कहा, ''देखो भोला लगता है लगातार काम करने से शीला को कमजोरी ने पकड़ लिया है, तुम आदमी भले हो इसलिए तुम्हे मैं अपनी तरफ से दवा की ये खुराक दे रहा हूँ, इसे शीला को खिला देना कुछ ही देर मे ठीक हो जाएगी। ''नादान भोला वो पुड़िया लिए घर पहुँचा और शीला को खिला दी। शीला सच मे भली–चंगी हो गयी और काम पर जाने लगी। ठेकेदार ने भोला पर दया दिखाते हुए उसके बच्चों का स्कूल में एडमीशन करवा देता है वो भी इस शर्त पर की शीला को उसका खाना बनाने के लिए आना होगा और एडमिशन का पैसा काटकर वो उसे पगार दे दिया करेगा। भोला और शीला को ना चाहते हुए भी उसकी शर्ते माननी पड़ी। शीला ने घर आकर सारी आप बीती भोला से कह सुनाई। ठेकेदार के प्रति घृणा और दुःख से भोला का मन भर गया, बहुत देर तक अपने मजबूरी के आँसू वो पीता रहा। फिर शीला को अपने पास बिठाते हुए प्यार से उसका हाथ थाम कर बोला, ''नहीं शीला तुम वैसे ही बेहोश हो गयी होंगी, ठेकेदार भला आदमी है उसने हमारी कितनी सहायता की है हमे उसकी नीयत पर शक नहीं करना चाहिए। ''शीला बिना कुछ कहे उसके पास से उठकर चली गयी और भोला अपनी बेबसी पर आँसू पीकर उसी जगह पर बैठा रहा।

दिन बीत रहे थे अब भोला दिन भर मजदूरी करता और शाम को किसी फैक्ट्री में काम करता। शीला भी दिन भर की मजदूरी के बाद ठेकेदार का खाना बनाती और मन ही मन सोचती इसी तरह का जीवन जीने के लिए वो गांव से शहर आए थे क्या? फिर आँखों में आए बेबसी के आंसुओं को छुपा जाती। दशहरे का पर्व था भोला ने बच्चों को नए कपड़े और खिलौने लेकर दिए। अपने लिए कुछ भी लेने खाने की इच्छा खत्म हो चुकी थी। शाम का समय है भोला अपनी झोपड़ी में उदास बैठा है, उसका बड़ा बेटा बाहर से भागते हुए आता है और कहता है कि, ''पापा आप भी हमारे साथ आओ न, देखो रावण जल रहा है, रावण मर रहा है पापा चलो ना।'' परन्तु भोला वही उदास बैठा सोच रहा है, 'रावण कहाँ मरा है, उसने तो केवल रूप बदला है, रावण जिंदा है गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी, बेबसी, मजबूरी, शोषण, घृणा, नफ़रत, भेद–भाव, उपेक्षा और मौकापरस्ती ये सब रावण के दस सर ही तो है। जब तक समाज में ये सब जिन्दा है रावण मर ही नहीं सकता वो आज भी जिन्दा है गाँव के जमींदार के रूप में शहर के ठेकेदार के रूप में जो दवा और सहायता के नाम पर गरीबों के जीवन से खेलते है। रावण जिंदा है।

शाखा, साबुन बाजार, लुधियाना

प्रादेशिक भाषा कड़ी में उर्दू रचना

حراستی کی طاقت

ایم بی اے کی ڈگری مکمل کرنے کے بعد قبل انوریما ایک اچھی نوکری کی تلاش میں بڑے شہر کا رخ کیا اور اچھی ملازمت کی تلاش میں تھی۔ ابھی صرف دو دن پہلے ، اس نے نوکری کے لئے ایک انٹرویو دیا تھا اور کل اسے اس کمپنی کا فون آیا تھا۔ آج انوریما بہت خوش تھی کیونکہ آج وہ دن ہے جب وہ اس کمپنی میں شامل ہو رہی ہے بڑے لگن کے ساتھ ، اس نے اپنا کام شروع کیا

ابھی وہ صرف کچھ دن تھے جب وہ کام کررہے تھے کہ ان کا ذہن دفتر سے بور ہونے لگا۔ اس نے دیکھا کہ اس کے ساتھی کام چوری کرتے تھے۔ انہیں کام نہ کرنے سے متعلق کوئی نہ کوئی بہانہ بناتے۔ کبھی کبھی گاہک سے ملنے کے نام پر وہ سارا دن آفس سے غائب رہتا تھا۔

انوریما کو اس طرح کا ماحول پسند نہیں آیا کیونکہ وہ ہمیشہ ایسے ماحول میں رہتی تھی جہاں ہر ایک کو اپنے کام کا شوق ہوتا تھا۔ اسے لگا کہ یہاں کام کرنے والے (آفس) لوگوں کی سوچ اچھی نہیں ہے۔ چونکہ اس نے خود ایسا۔ کبھی نہیں کیا ، اس نے محسوس کیا کہ اس کے ساتھ کام کرنے والے ساتھیوں کی سطح بہتر نہیں ہے۔

انوریما کے ذہن میں ان ساری چیزوں نے بہت ہلچل پیدا کردی تھی ، اس نے کبھی سوچا بھی نہیں تھا کہ صورتحال ایسی ہوگی۔ لیکن اب اس نے فیصلہ کرلیا تھا کہ وہ نوکری چھوڑ دے گی۔ وہ کام چھوڑنے کی درخواست لے کر اپنے باس کے دفتر پہنچی۔

باس نے اس کا خط دیکھ کر پوچھا ، "کیا بات ہے انوریما ، تم نوکری کیوں چھوڑ رہے ہو؟" جبکہ آپ کی کارکردگی بہت اچھی ہے۔انوریما نے باس کو ساری باتیں بتاتے ہوئے کہا ، "میں ایسے لوگوں کے ساتھ کام نہیں کرسکتا جن کے سوچنے اور کام کرنے کا انداز کمتر ہے۔"

انوریما کے مالک نے تھوڑی دیر کے لئے سوچا ، وہ انوریما کے ذہن میں چل رہی ہنگامے کو سمجھ گیا ، اور کہا یہ آپ کا اپنا فیصلہ ہے ، آپ نوکری چھوڑ سکتے ہیں ، لیکن نوکری چھوڑنے سے پہلے میں آپ کو ایک ٹاسک دوں گا۔ کیا آپ پسند کریں گے؟ انوریما نے جواب دیا ، 'سر ، ہم کیا کریں گے؟ تب صرف باس نے پانی سے بھرا گلاس دیا تو اس نے انوریما سے کہا ، "آپ اس گلاس سے اپنے آفس کے دو چکر لگائیں اور پانی کا ایک قطرہ بھی نیچے نہیں گر رہا ہے۔"

انوریما کو یہ بہت عجیب لگا لیکن اس نے یہ کام لیا اور دو راؤنڈ کے بعد باس تک پہنچا۔ باس نے پوچھا ، "کیا پانی کا ایک قطرہ گر گیا؟" انوریما نے کہا "بالکل نہیں جناب! لیکن آپ نے ایسا کیوں کیا؟" باس نے کہا ، جب آپ یہ کر رہےتھے تو دفتر کے لوگ آپ کو کیا بتا رہے تھے؟ انوریما نے کہا ، سر ، میں نہیں جانتا کیونکہ میری ساری توجہ پانی کے گلاس پر تھی تاکہ ایک قطرہ بھی نہ گرے۔

انوریما کا مالک مدھم مسکرا رہا تھا ، اس نے انوریما کو سمجھایا کہ وہ وہی کام کر رہے ہیں جس سے آپ کو پریشانی ہو رہی ہے ، لیکن آپ نے اس پر توجہ نہیں دی کیونکہ آپ نے اپنی ساری توجہ اپنے کام پر مرکوز کردی ، یعنی ایک گلاس پانی۔ انوریما بھی مسکرا رہی تھی اور وہ سب کچھ سمجھ گئی تھی۔ اب وہ آگے بڑھی اور وہ خط اٹھایا اور اسے کوڑے دان میں پھینک دیا اور اپنے کام میں مرتکز ہوا۔ اب وہ خوش تھی۔

تعلیم - زیادہ تر لوگ زندگی میں کامیاب نہیں ہوتے ہیں کیونکہ وہ یہاں کی آس پاس کی چیزوں یا آس پاس کے واقعات پر توجہ دیتے ہیں۔ لیکن اس کے ، کسی کو اپنے اپنے کام میں مرکوز دماغ کے ساتھ کام کرنے کی بجائے مخالف ماحول میں توجہ دینے کی بجائے کام کرنا چاہئے۔

نیہا نعیم
ہو. پی اینڈ ڈی ڈیپارٹمنٹ

नेहा नईम

उर्दू रचना का हिंदी रूपांतर

एकाग्रता की शक्ति

अनुरिमा ने कुछ समय पहले ही MBA की डिग्री पूर्ण कर एक अच्छी नौकरी की तलाश में बड़े शहर की ओर रुख किया उसे एक अच्छी काम की तलाश थी। अभी पिछले दो दिन पहले की बात है, उसने एक नौकरी के लिए इंटरव्यू दिया था और कल ही उसके पास उस कम्पनी से कॉल आ गयी।

आज अनुरिमा बहुत खुश थी क्योंकि आज वह दिन है जब वह उस कम्पनी को ज्वाइन कर रही है। बड़े ही लगन के साथ उसने अपनी काम शुरु किया।

अनुरिमा एक ईमानदार, मेहनती और अपनी जिम्मेदारियों को सही से निभाने वाली एक काबिल महिला थी इसीलिए कम्पनी का मालिक अनुरिमा के कार्य को पसन्द करता था।

अभी कुछ ही दिन हुए उसे नौकरी करते हुए कि उसका मन कार्यालय से ऊबने लगा। उसने देखा कि उसके सहयोगी अपने काम से मन चुराते थे। काम न करना पड़े उससे संबंधित कोई न कोई बहाना बनाते रहते थे। कभी–कभी ग्राहक से मुलाकात के नाम पर सारा दिन कार्यालय से गायब रहते थे।

इस तरह का वातावरण अनुरिमा को पसन्द नहीं आ रहा था क्योंकि वह हमेशा ऐसे वातावरण मे रही जहाँ अपने कार्य के प्रति सभी कर्मठ थे। उसने महसूस किया कि यहाँ पर (कार्यालय) काम करने वाले लोगो की सोच अच्छी नही है। क्योंकि वह स्वयं ऐसा नहीं करती थी इसीलिए उसे लगा कि उसके साथ कार्य करने वाले सहकर्मियों का स्तर अच्छा नहीं है।

अनुरिमा के मन में ये सभी बातें बहुत ही उथल–पुथल मचा रखी थी, उसने कभी सोचा नहीं था कि हालात ऐसे हो जायेंगे। लेकिन अब वह फैसला कर चुकी थी कि वह नौकरी छोड़ देगी। कार्य छोड़ने का प्रार्थना पत्र लेकर वह अपने बॉस के कार्यालय पहुंच गयी।

बॉस ने उसका पत्र देखा और पूछा, ''क्या बात है अनुरिमा, तुम नौकरी क्यों छोड़ रही हो? जबकि तुम्हारा कार्य तो बहुत अच्छा है।''

अनुरिमा ने बॉस को सारी बातें बताई और बोली, "मैं ऐसे लोगों के साथ काम नहीं कर सकती जिनके सोचने एवं कार्य करने का तरीका निम्नकोटि का है।"

अनुरिमा के बॉस ने कुछ देर सोचा, वह अनुरिमा के मन में चल रही उथल–पुथल को समझ चुका था, और बोला यह तुम्हारा स्वयं का फैसला है चाहो तो नौकरी छोड़ सकती हो लेकिन नौकरी छोड़ने से पूर्व मैं तुम्हे एक कार्य दूंगा क्या तुम करना चाहोगी? अनुरिमा ने उत्तर दिया, 'जी सर, क्या करना होगा?

तभी बॉस ने एक पानी से भरा गिलास देते हुए अनुरिमा से बोले, "तुम इस गिलास को लेकर अपने कार्यालय के दो चक्कर लगाओ सनद रहे गिलास में से एक बूंद भी पानी नीचे न गिरे।"

अनुरिमा को यह बात बहुत ही अजीब लगी लेकिन उसने यह कार्य लिया दो चक्कर लगाने के पश्चात बॉस के पास पहुंची।

बॉस ने प्रश्न किया, "क्या एक बून्द भी पानी गिरा?"

अनुरिमा बोली 'बिलकुल नही सर! पर आपने ऐसा क्यों कराया?'

बॉस ने कहा जब तुम यह कार्य कर रही थी तो कार्यालय के लोग तुम्हे क्या कह रहे थे? अनुरिमा बोली, सर पता नहीं क्योंकि मेरा पूरा ध्यान पानी के गिलास पर था कि एक बूंद भी न गिरे।

अनुरिमा के बॉस मंद मंद मुस्कुरा रहे थे, उन्होंने अनुरिमा को समझाते हुए कहा कि वे लोग वही कार्य कर रहे थे जिससे तुम्हे समस्या थी लेकिन तुमने ध्यान इसलिए नहीं दिया क्योंकि तुमने अपना सारा ध्यान अपने काम पर केंद्रित की थी अर्थात पानी के गिलास पर।

अनुरिमा भी अब मुस्कुरा रही थी उसे सारी बातें समझ आ गयी थी। अब वह आगे बढ़कर उस पत्र को उठाया और उसे फाड़कर कूड़े में डाल दिया तथा अपने कार्य में एकाग्रता से जुट गयी। अब वह प्रसन्न थी।

अधिकतर लोग जीवन में सफल इसलिए नहीं हो पाते क्योंकि वह इधर–उधर की बातों या आस–पास की घटनाओं पर ध्यान केन्द्रित कर लेते हैं। लेकिन व्यक्ति को इसके विपरीत आसपास के वातावरण में ध्यान केंद्रित न कर स्वयं के कार्य में एकाग्र मन से कार्य करना चाहिए।

प्रधान कार्यालय,
योजना एवं विकास विभाग

काव्य–मंजूषा

बदलता वक्त

राम कुमार

कलियों को मैंने,
खिलते हुए देखा।
खिलती कलियों को मैंने,
मुरझाते हुए देखा।
मुरझाती कलियों को मैंने,
फिर खिलते हुए देखा।
बागों को मैंने,
फूलों से महकते हुए देखा।
महकते बागों को मैंने
फूलों से सड़ते हुए देखा।
खुबसूरती को मैंने,
बदसूरती में बदलते हुए देखा।
बदसूरती को मैंने,
चांद सा रूप बदलते हुए देखा।
हंसते हुए को मैंने,
आँसू बहाते हुए देखा।
रोते हुए को मैंने,
खिलखिला के हंसते हुए देखा।
बचपन को मैंने,
बुढ़ापे सा जीवन जीते हुए देखा।
बुढ़ापे को मैंने,
जवानी सा एहसास होते हुए देखा।
गरीबी को मैंने,
हंसते हुए देखा।
अमीरी को मैंने,
रोते हुए देखा।
गरीबी को मैंने,
खाते हुए देखा।
अमीरी को मैंने,
भूखे सोते हुए देखा।
वक्त को मैंने,
वक्त में बदलते हुए देखा।

शाखा–पल्लवपुरम

इस वक्त से ही तुम जाओगे

तमन्ना

कुछ भी तो नहीं सीखा तुमने,
तुम फिर वैसे हो जाओगे।
फिर दौड़ोगे दिन–रात यूं ही,
तुम फिर उत्पात मचाओगे।।

कारें लेकर दौड़ोगे तुम,
काला आकाश बनाओगे।
कंकरीट के जंगल के राजा,
तुम जंगल तक घुस जाओगे।।

आधे की होगी भूख तुम्हें,
तुम पूरा ही बनवाओगे।
क्वारंटाइन है तुम्हें न भाया,
तुम वीकेंड का जश्न मनाओगे।।

फिर प्यास बढ़ेगी थोड़ी सी,
तुम फिर यमुना पी जाओगे।
फॉरेन ट्रिप वाले पैसों से,
तुम जंगल रौंद के आओगे।।

वक्त कहाँ वापस आता है,
तुम पीछे ही पछताओगे।
इस वक्त से सबक ले लो वरना,
इस वक्त से ही तुम जाओगे।।

आँचलिक कार्यालय, गुरूग्राम

अनुभव-प्राप्ति के लिए काफी मूल्य चुकाना पड़ सकता है पर उससे जो शिक्षा मिलती है वह और कहीं नहीं मिलती – अज्ञात

नारी

विशाखा शर्मा

कभी बेटी, कभी बहन
कभी पत्नी तो कभी मां है नारी,
पुरुष जिसके बिना असहाय है ऐसी है नारी,
कभी ममता की फुलवारी तो कभी राखी की क्यारी है नारी,
सृष्टि जिसके बिना थम जाए ऐसी है नारी,
पुरुषों की पूरी भीड़ पर
अकेली भारी है नारी,
जो सृष्टि को जलाकर राख कर दे
ऐसी चिंगारी है नारी,
बेटी हो ....तो पिता की राज दुलारी है नारी,
मां हो...............तो संतान के लिए हमेशा कुर्बान है नारी,
बहन हो............... तो भाई की लाडली है नारी,
पत्नी हो............... तो पति की जान है नारी,
पुरुष हमेशा अधूरा तो हमेशा पूरी है नारी,
सृष्टि जिस पर घूम रही वह धुरी है नारी,
जब गर्भ में नहीं मारोगे तभी तो तुम्हारी है नारी,
जब नारी है तभी तो यह सृष्टि है सारी

आँचलिक कार्यालय
बरेली

मेरी प्यारी माँ

प्रेक्षा मनोचा

ममता का वो आंचल चेहरे की वो मुस्कान,
भुला देती है वो सारे जीवन की थकान।

मां के चरणों में है वो जन्नत,
उसकी हर दुआ से कुबूल होती है मेरी मन्नत ,

मेरे आंसुओं को अपनी पलकों में छुपा ले जाना चाहती जो,
मेरी खुशियों को अपनी भी उम्र लगवा देना चाहती जो,

मेरे दर्द को समेट कर दरिया में बहा देना चाहती जो,
हर जख्म की एक वो ही दवा बन जाती,
ऐसी है मेरी मां प्यारी सी वो मां भोली सी वो मां...
ममता की छांव में जिसकी रेंगते–रेंगते बड़ी हुई मैं,
मै हूं एक शब्द, तो पूरी भाषा है माँ
ऐसी है मेरी मां, ये ही उसकी परिभाषा है।

आँचलिक कार्यालय, बरेली

उम्मीद की किरण

विपिन त्यागी

पर्दे के पीछे छुप जाता हूँ,
मैं वक्त हूँ, अरे इंसान,
तेरे चेहरे पर नजर नही आता हूँ,
कोई खुशी हो या गम कोई,
या फिर राज की बात कोई,
हाले दिल बता नही पाता हूँ।

उम्मीद की किरण ढूंढती हैं निगाहें कहीं,
कि रोशनी कोई दिखेगी कहीं न कहीं,
बहती नैया को मिलेगा मांझी कोई,
और माझी को मिलेगा साहिल कोई,
अपनी पतवार माझी को सौंप दी मैंने,
और जीवन नैया भी उसी को सौंप दी मैंने।

संघर्षो का सुख, सिरहाने रख सोया हूँ मैं,
शायद इसलिए कभी चैन से न सोया हूँ मैं,
जीवन है तो, संघर्ष तो होगा ही,
और संघर्ष से, विजय तो होगी ही।

न रूकूं मैं कभी, न थकूं मैं कभी,
मैं चलूँ सदा, न थमूं मैं कभी,
विजय हो न हो, पराजय न हो मेरी,
प्रभु तुझसे बस, यही इल्तजा है मेरी।

प्रधान का. महाप्रबंधक सचिवालय

नैन्सी प्रसाद

मध्यप्रदेशः कला एवं संस्कृति का समामेलन

किसी भी राज्य के विकास में वहां की कला एवं संस्कृति महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह साझा दृष्टिकोण, मूल्यों, लक्ष्यों और व्यवहारों का प्रतिनिधित्व करता है। सभी आर्थिक सामाजिक एवं अन्य गतिविधियों में संस्कृति एवं रचनात्मकता का समावेश होता है। कला एवं संस्कृति विभाग का मुख्य कार्य विविध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने, कला रूपों को लोकप्रिय बनाने, कलात्मक उद्योगों को बढ़ावा देने और कलाकारों को प्रोत्साहित करना है। मध्यप्रदेश का स्थापना दिवस 1 नवम्बर 1956 है। इसकी राजधानी भोपाल है। संस्कृति में मध्यप्रदेश जगमगाते दीपक के समान है, जिसकी रोशनी की सर्वथा अलग प्रभा और प्रभाव है। यह विभिन्न संस्कृतियों की अनेकता में एकता का जैसे आकर्षक गुलदस्ता है, मध्यप्रदेश जिसे प्रकृति ने राष्ट्र की वेदी पर जैसे अपने हाथों से सजाकर रख दिया है, जिसका सतरंगी सौन्दर्य और मनमोहक सुगंध चारों ओर फैल रहे हैं। यहां के जनपदों की आबोहवा में कला, साहित्य और संस्कृति की मधुमयी सुवास तैरती रहती है। यहां के लोक समूहों और जनजाति समूहों में प्रतिदिन नृत्य, संगीत, गीत की रसधारा सहज रूप से फूटती रहती है। यहां हर दिन पर्व की तरह आता है और जीवन में आनंद रस घोलकर स्मृति के रूप में चला जाता है। इस प्रदेश के तुंग–उत्तुंग शैल शिखर विन्ध्य–सतपुड़ा, मैकल – कैमूर की उपत्यिकाओं के अंतर से गूंजते अनेक पौराणिक आख्यान और नर्मदा, सोन, सिंध, चंबल, बेतवा, केन, धसान, तवा नदी, ताप्ती, शिप्रा, काली सिंध आदि सर–सरिताओं के उद्‌गम और मिलन की कथाओं से फूटती सहस्त्र धाराएं यहां के जीवन को आप्लावित ही नहीं करतीं, बल्कि परितृप्त भी करती हैं।

भारत में गीत–संगीत, नृत्य, नाटक–कला, लोक परंपराओं, कला–प्रदर्शन, धार्मिक–संस्कारों एवं अनुष्ठानों, चित्रकारी एवं लेखन के क्षेत्रों में एक बहुत बड़ा संग्रह मौजूद है जो मानवता की "अमूर्त सांस्कृतिक " विरासत के रुप में जाना जाता है। इस खंड में भारत की सांस्कृतिक विरासत, प्राचीन स्मारकों, साहित्य, दर्शन, विभिन्न योजनाओं, कार्यक्रमों, कला–प्रदर्शनों, मेले, त्यौहारों एवं हस्तकला के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई है।

मध्यप्रदेश के प्रमुख अभिलेख

साँची अभिलेखः– यहाँ से प्राप्त लेख गुप्त संवत् 131–450 ई. का है। इसमें हरिस्वामिनी द्वारा यहाँ के आर्यसंघ को धन दान में दिये जाने का जिक्र है।

मन्दसौर अभिलेखः– यह भू–भाग प्राचीन पश्चिमी मालवा का हिस्सा था। इसमें विक्रम संवत् 529 (473 ई.) की तिथि दी गई है। यह लेख प्रशस्ति के रूप में है, जिसकी रचना संस्कृत विद्वान वत्सभट्टी ने की थी। इस लेख में इस राजा के राज्यपाल बन्धुवर्मा का उल्लेख मिलता है जो वहाँ शासन करता था। इस लेख में सूर्य मंदिर के निमार्ण का भी उल्लेख किया गया है।

उदयगिरि गहालेखः– गुप्त संवत् 106 या 425 ई. का एक जैन अभिलेख मिला है। इसमें शंकर नामक व्यक्ति द्वारा इस स्थान में पार्श्वनाथ की मूर्ति स्थापित किए जाने का विवरण है।

मध्यप्रदेश के संगीत और लोकनृत्य

मध्यप्रदेश का संगीत संगीतकारों की समृद्ध विरासत को समृद्ध और जीवंत है। लोकगीत, भारतीय शास्त्रीय संगीत शैली के गीत संगीत प्रेमियों के बीच समान रूप से लोकप्रिय हैं। त्यौहारों के दौरान, बंसुरी, हरमोनियम, युवा और बूढ़े दोनों के दिलों की संगत में गाने की धुन बजती है। नृत्य मंडली के परिष्कृत कदमों से उन्माद का

सारा हिन्दुस्तान गुलामी में घिरा हुआ नहीं है। जिन्होंने पश्चिमी शिक्षा पाई है और जो उसके पाश में फँस गए हैं, वे ही गुलामी में घिरे हुए हैं – महात्मा गांधी

माहौल और भी बढ़ जाता है।

सैला नृत्यः– सैला नृत्य गणगौर के उत्सव पर किया जाता है। यह गुजरात में होने वाले डांडिया नृत्य से मिलता है।

रीना नृत्यः– बैगा तथा गोंड महिलाओं का दीपावली के बाद किया जाने वाला नृत्य हैं।

भगोरिया नृत्यः– भीलों द्वारा किया जाने वाला नृत्य है।

परधौनी नृत्यः– विवाह के अवसर पर बैगा आदिवासियों द्वारा बारात की अगवानी के समय किया जाता है।

मध्य प्रदेश की चित्रकला परिदृश्य

भारत की हृदयस्थली के रूप में स्थापित मध्य प्रदेश कलात्मक और सौन्दर्यपूर्ण स्थलों से परिपूर्ण है। अपने नाम को चरितार्थ करता हुआ यह मध्य में स्थित है। पर्यावरणीय दृष्टि से इसका प्राकृतिक सौन्दर्य मनमोहक है। इसका अलंकरण करने में समृद्ध जल स्त्रोत, हरित तथा पर्णपाती वन धातु भण्डार, पर्वत और कन्दराएँ सभी जीवनावश्यक स्त्रोतों की भूमिका रही है। इकबाल ने अपनी कुछ पक्तियों में इस प्रकार बयां किया है–

यूनानो मिश्रो रोमा सब मिट गए जहाँ से
अब अभी तलक है नामों निशां हमारा।

हमारी रंगों में समाए चरावेति–चरावेति के कारण ही हमारा अस्तित्व बना हुआ है। कला संस्कृति के मूल में धार्मिकता का समावेश मिलता है। यूनान, चीन, भारतवासियों को कला की प्रेरणा प्रकृति से ही प्राप्त हुई। इसका प्रमाण प्रागैतिहासिक काल के आदि मानव द्वारा बनाए गए वे चित्र हैं, जिनमें प्रकृति के स्पष्ट दर्शन होते हैं। यहां पर चित्रकला का इतिहास पाँच चरणों में दिखाई देते हैं–

1. जैन कालीन चित्रकला
2. तोमर कालीन चित्रकला
3. मुगलकालीन चित्रकला
4. मराठा कालीन चित्रकला
5. आधुनिक चित्रकला

1. **जैन कालीन चित्रकलाः**– जैन शैली के चित्र तीन रूपों में प्राप्त होते है– (क) ताड़पत्र पर बने पोथी चित्र (ख) कपड़े पर बने पट चित्र (ग) कागज पर बने पोथी चित्र या फुटकर चित्र। जैन चित्रकला का अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ है कि सन् 1424 में डूंगरेन्द्र सिंह का शासन हुआ था जिन्होंने इस कला को संरक्षण प्रदान किया। महाकवि रायधु की कृतियां चित्रमय पाण्डुलिपियों के रुप में प्राप्त हुई हैं–'पासणाह चरिउ' 'शान्तिनाह चरिउ' 'जसहर चरिउ'।

2. **तोमर कालीन चित्रकलाः**– तोमर कालीन चित्रकला को मध्य युगीन या राजपूत शैली कहा जा सकता है। मध्य काल में ग्वालियर में तोमर राजाओं का वर्चस्व था। वीरसिंह देव तोमर के समय कवि नारायणदास द्वारा रचित "छिपाई चरित" में चित्रकला के विषय पर काफी रुचिकर सामग्री उपलब्ध है।

3. **मुगलकालीन चित्रकलाः**– मुगल काल में कला और साहित्य का विकास हुआ। इसी समय वास्तुकला और चित्रकला दोनों ही फली–फूली। अकबर के शासन काल में अनेकों चित्रकार थे, जिसमें प्रमुख हैं–केशव, महेश, फारुख बेग, सांवला, हरिवंश आदि इनमें से अनेक चित्रकार ग्वालियर के बताए जाते हैं।

4. **मराठा कालीन चित्रकलाः**– ग्वालियर में मराठों का इतिहास सन् 1765 से प्राप्त होता है। यहाँ की स्थापत्य कला में इटालियन प्रभाव दिखाई देता है, जिसमें टस्कन, इटालियन पलाजियों, कैरियोथिन शैली अपनाई गई है। दीवारों पर चटख रंगों में चित्र बने हैं। इस पर कमलाकृतियाँ तथा कृष्ण लीला के दृश्य बने हैं।

   इस काल में चित्रकारों को 'चितेरा' कहा गया है।

5. **आधुनिक चित्रकलाः**– आधुनिक चित्रकला में विदेशी प्रभाव पड़ने से आमूल–चूल परिवर्तन देखने को मिले। मध्यप्रदेश का कलात्मक एवं सांस्कृतिक इतिहास भी कम रोचक नहीं है। प्रागैतिहासिक काल के अश्मावशेष और शैलचित्रों का विराट संसार मानवीय विकास की कहानी कहता है। भोजपुर, भीमबेटका, पंचमढ़ी, होशंगाबाद, रायसेन में प्राचीन चित्रावशेष विद्यमान हैं।

श्री नारायण श्रीधर का कहना है कि "कला में शब्द नहीं उसमें रंग ही प्राथमिक महत्व की चीज है।"

मध्यप्रदेश का आदिवासी कला परिदृश्य

मध्यप्रदेश में जनजाति की बहुलता है। जनजातियों समाज में सर्वोत्तम कार्यात्मक निर्भरता मिलती है। पिछड़ी हुई आर्थिक परिस्थितियों के कारण इनका मुख्य आर्थिक कार्य प्राकृतिक संसाधनों का दोहन है। यहाँ इनकी अपनी सांस्कृतिक विरासत है। यहाँ "गोण्डवाना–प्रदेश" भौगोलिक दृष्टि से प्राचीनतम क्षेत्रों में से एक है। जनजाति संस्कृति के दर्शन हमें विभिन्न अनुष्ठानों में दिखाई देता है। इनके जीवन का सौन्दर्य बोध चित्रों, शिल्पों, नृत्य और गीतों में दिखाई देता है। भील जनजाति के लोग 'पिथौरा' मिथकीय घोड़े बनाते हैं। इसी प्रकार कोरकू की स्त्रियाँ दीवारों पर 'थाठिया' खड़िया से बनाती है। ये जनजातियाँ अपने शरीर को गुदने से अलंकृत कराते हैं। ये गुदने मात्र शारीरिक अलंकरण नहीं हैं, बल्कि प्रतीकात्मक रेखाओं के माध्यम से अन्वेषित अर्थों को सदियों और पीढ़ियों से जनजातियों ने अपने शरीर पर सुरक्षित रखा है। ये जनजातियां सिन्थेटिक रंगों

से कागज़ कैनवास पर उतारा है। विशेषकर ये चित्रकारी 'परधान' और 'नोहडोरा' कहलाती है।

मध्यप्रदेश की संस्कृति

श्रृंगारिक कला के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध खजुराहो के मंदिर छतरपुर जिले में स्थित है। 1000 ई. से बनना शुरु हुए इन मंदिरों का निर्माण चंदेल राजाओं ने करवाया था। ग्वालियर और उसके आसपास के मंदिर भी उल्लेखनीय है। मांडू (धार के समीप) के महल और मस्जिद, 14वीं शताब्दी में निर्मित बांधव गढ़ का अदभुत किला और संभवतः मध्यप्रदेश के भूतपूर्व कुवरों के आवासों में सबसे शानदार ग्वालियर का किला, वास्तुशिल्पीय उपलब्धियों का प्रतिनिधित्व करने वाले अन्य उल्लेखनीय उदाहरण है। यद्यपि यहां के लोगों ने बाहरी प्रभावों को कमोबेस ग्रहण किया है लेकिन उनकी कई जनजातीय परंपराएँ जीवन्त तथा सशक्त बनी हुई हैं, जनजातीय मिथकों व लोककथाओं को बड़ी संख्या में सुरक्षित रखा गया है। अब भी गोंड जाति अपने आदिपुरुष लिंगोपेन की अनुश्रुत वीर गाथा को गाते हैं। लछमनजति दन्तकथा एवं पंजवानी दंतकथा प्रसिद्ध हैं। ऐसे ही एक स्मारक, साँची स्तूप को मूलतः 265 से 238 ई.पू. में सम्राट अशोक ने बनवाया था। बाद में शुंग राजाओं ने इस स्तुप में और भी काम करवाया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

राज्य में हर साल कई जाने–माने सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं, जैसे उज्जैन का कालिदास समारोह (प्रदर्श्य कलाओं और ललित कलाओं के लिए), ग्वालियर का तानसेन समारोह (गायन) और खजुराहो का नृत्य महोत्सव, जिसमें भारत भर के कलाकार शामिल होते हैं। भोपाल में एक बेजोड़ सांस्कृतिक भवन भारत भवन है, जो विभिन्न क्षेत्रों के कलाकारों के मिलन स्थल का काम करता है। भोपाल ताल के समीप स्थित इस भवन में एक संग्रहालय, एक पुस्तकालय, एक मुक्ताकाशी रंगमंच और बहुत से सम्मेलन परिसर हैं। मंदसौर और उज्जैन में महत्वपूर्ण वार्षिक धार्मिक मेले लगते हैं।

त्यौहार

मध्यप्रदेश में कई त्यौहार और उत्सव मनाए जाते हैं। आदिवासियों का एक महत्वपूर्ण त्यौहार 'भगोरिया' है, जो परंपरागत हर्षोल्लास से मनाया जाता है। खजुराहों, भोजपुर, पंचमढ़ी और उज्जैन में शिवरात्रि के पर्व के दौरान स्थानीय परंपराओं का रंग दिखाई देता है। चित्रकूट और ओरछा में रामनवमी पर्व के आयोजन की अनोखी परंपरा है। ओरछा, मालवा और पचमढ़ी के उत्सवों में कला और संस्कृति का बड़ा सुंदर मेल दिखाई देता है। ग्वालियर के 'तानसेन संगीत समारोह' मैहर के 'उस्ताद अलाउद्दीन ख़ाँ संगीत समारोह' उज्जैन के 'कालिदास समारोह' और 'खजुराहों के नृत्य समारोह' मध्यप्रदेश के कुछ प्रमुख कला उत्सव हैं। जबलपुर में संगमरमर की चट्टानों के लिए मशहूर भेड़ाघाट में इस वर्ष से वार्षिक 'नर्मदा उत्सव' की शुरुआत की गई है। शिवपुरी नामक स्थान में भी इसी वर्ष से शिवपुरी उत्सव शुरु किया गया है। इंदौर के आसपास के क्षेत्रों में दीपावली के बाद खेला जाने वाला पारंपरिक युद्ध है– "हिंगोट युद्ध"। इस युद्ध में प्रयोग होने वाला हथियार हिंगोट है। जो हिंगोट फल के खोल में बारुद, कंकड़–पत्थर भरकर बनाया जाता है। इस युद्ध में किसी दल की हार–जीत नहीं होती किन्तु सैकड़ों लोग गंभीर रुप से घायल हो जाते हैं।

मध्यप्रदेश की शिल्पकला

मध्यप्रदेश भारत की विभिन्न संस्कृतियों का सम्मिलित बिंदु है, अतः यह कला समृद्ध क्षेत्र है। कला विविधता और संपन्नता के कारण इसे कलाओं का घर कहा जाता है। यहां की प्रमुख कलाओं का विवरण इस प्रकार हैः–

कंघी शिल्पः– कंघी शिल्प बनाने का श्रेय बंयारा जनजाति को है। प्रदेश में कंघी शिल्प के प्रमुख केन्द्र उज्जैन, रतलाम नीमच हैं। आदिवासियों द्वारा कंघियों पर अलंकरण, गोदना और भित्ति चित्रों का निर्माण किया जाता है।

गुड़िया शिल्पः– प्रदेश में नए–पुराने वस्तुओं एवं कागजों से गुड़िया बनाने की लोक परम्परा है। ग्वालियर अंचल तथा झाबुआ भीली गुड़िया के लिए प्रसिद्ध है। मिट्टी शिल्प–झाबुआ, मण्डला के कुम्हारों द्वारा बनाए गए।

बांस शिल्पः– झाबुआ, मण्डला में बांस से विभिन्न बर्तन व सजावटी सौंदर्य की वस्तुएं बनाई जाती है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि मध्यप्रदेश राज्य में कला एवं संस्कृति का भरपूर समामेलन है। मध्यप्रदेश के कला और शिल्प आदिवासी कला के स्वरुप को मध्य प्रदेश में रहने वाले लोगों की परंपरा में विलीन हो गए हैं। लोग मध्य प्रदेश में कला और शिल्प की एक विशाल विविधता पा सकते हैं। कला और शिल्प एक विचार देते हैं–वंशानुगत कौशल और स्थानीय लोगों की शिल्प कौशल की प्रकृति। कला और शिल्प में बांस का काम, धातु का काम, कालीन बुनाई, गहने और आभूषण, मिट्टी के बर्तन, पत्थर–नक्काशी, पेंटिंग,

अंग्रेजी माध्यम भारतीय शिक्षा में सबसे बड़ा विघ्न है। सभ्य संसार के किसी भी जन समुदाय की शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा नहीं है – मदनमोहन मालवीय

छपाई और लकड़ी के काम शामिल हैं। मध्यप्रदेश का क्षेत्र हरे–भरे वस्त्रों और ग्रामीण हस्तकलाओं में बड़ा है। लोगों नें हाथकरघा चंदेरी साड़ियों और महेश्वरी साड़ी के संभाला। आदिवासी कारीगर धातु के माल और सौंदर्य वस्तुओं में कुशल हैं। क्षेत्र में दुनिया भर से पर्यटक आते हैं और इसके कलात्मक खजाने का पता लगाते हैं। प्रकृति प्रेमी भी जंगलों और वन्य जीवन अभ्यारण्यों में घूमते हैं जो मध्यांचल में फैले हुए हैं। परिणामस्वरुप, मध्य प्रदेश के विभिन्न शहरों में होटल, पब, रेस्तरां, इस प्रकाल वर्ष के माध्यम से बड़ी संख्या में पर्यटकों की घुसपैठ की इन मांगों को पूरा करने के लिए निर्माण किया जाता है। यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य लुभावना और अनेकों सम्भावनाओं से परिपूर्ण है। निरन्तर विकास की प्रक्रिया के दौरान इसका सौन्दर्य निखरता जा रहा है। कहीं पर्वत श्रृखंलाएं, कहीं दूर तक फैले पठार, मैदान, कहीं ऊँची–नीची घटियां विद्यमान हैं। यहाँ जीवन–दायनी नदी नर्मदा है जो मध्य प्रदेश की सबसे बड़ी नदी है। मानव जीवन में वनस्पति का बहुत महत्व है। लगभग 27% वनों से आच्छादित है। महेश्वरी साड़ी के पारम्परिक बुनकारों द्वारा बुनी गयी सूती और रेशमी साड़िया सुंदर टिकट और पक्के रंग की होती है। जिन पर जरी और केल के धागे से छोते बेल बूटे काढ़े जाते हैं। महेश्वरी साड़ी की प्रमुख विशेषता छोटी चौकड़ी, मनमोहक पल्लू हल्के गहरे चमकदार चाँदी और स्वर्णित रंगों में जरी रेशम से हाथ से की गयी कढ़ाई है। कुल मिला कर यह कहा जा सकता है कि यहां के स्थानीय लोग इन कलाकृति और प्रकृति के साथ एक अटूट संबंध बना चूके हैं। मध्यप्रदेश का धर्म और भाषा में भी सुखद समामेलन है। यहां की संस्कृति हिंदु, जैन, ईसाई, मुस्लिम, बौद्ध और सिखों का एक सुखद समामेलन है। ज्यादातर लोग हिंदू हैं। हालांकि, मुसलमान, जैन, ईसाई और बौद्ध के बड़े पैमाने पर अल्पसंख्यक हैं। एक छोटी सिख आबादी भी है। हिंदी भाषा मध्यप्रदेश की मुख्य और आधिकारिक भाषा है। भाषा में बोलियाँ, जैसे बुंदेलखंडी, मालवी और छत्तीसगढ़ी भाषा पुरे राज्य में बोली जाती हैं। यहां स्वादिष्ट व्यंजनों द्वारा लुभाया जाता है, जिससे भोजन मध्यप्रदेश की संस्कृति का अभिन्न तत्व बन जाता है। खाद्य पदार्थों में देखा जाए तो राजस्थानी और गुजराती व्यंजनों का एक छोटा सा स्पर्श है। मूलनिवासियों के लिए लस्सी पसंदीदा पेय है। मीठे व्यंजनों जैसे मावा–बाटी, श्रीखंड, खोपरापक और मालपुआ के लिए भी यह राज्य जाना जाता है। इस प्रकार यहां के निवासियों ने अपने लोगों को हर परिपेक्ष्य में अपने को विकसित करने का पर्याप्त समय दिया है ताकि वे अपनी संगीत विरासत, नृत्य शैली, त्यौहार, कला और शिल्पकला को समृद्ध कर सकें और मध्यप्रदेश की संस्कृति के सभी अवतार रॉयल सागा और जनजातीय परंपरा के लिए जिम्मेदार ठहराया।

आँचलिक कार्यालय
भोपाल

उद्घाटन

स्टाफ ट्रेनिंग कॉलेज, रोहिणी में बैंक की शाखा का उद्घाटन करते हुए बैंक के कार्यकारी निदेशक श्री अजित कुमार दास। साथ हैं महाप्रबंधक श्री विनय कुमार मेहरोत्रा, श्री रवि मेहरा, श्री प्रवीन मोंगिया, आँचलिक प्रबंधक, दिल्ली–2, श्री विनोद कुमार पांडे (उप महाप्रबंधक) तथा शाखा प्रबंधक श्री मनोज कुमार।

जी. एस. बाली

संस्मरण

''ओड़िशा का महाचक्रवाती तूफ़ान (Super Cyclone 1999) भूलाए नहीं भूलती मेरे जीवन......सदी की सबसे बड़ी त्रासदी।

अक्टूबर 1999 में आये महाचक्रवाती तूफान और उससे हुए सदी के महाविनाश के साक्षात् दर्शनों को याद कर आज 21 साल बाद भी मेरे मन–मस्तिष्क में बर्बादी का वह मंजर एक ना भुलाए जाने वाले दु:खद चल–चित्र की भाँति अंकित है जिसे मैं आप के साथ साझा कर रहा हूँ।

बात उन दिनों की है जब मैं पंजाब एण्ड सिंध बैंक के ज़ोनल ऑफिस कलकत्ता में अक्टूबर 1999 में पदस्थ था। भुवनेश्वर और कटक की शाखाएं हमारे क्षेत्र प्रबंधन में आती थीं जहाँ कई दिनों से तूफ़ान में फंसे भूखे प्यासे बैंक कर्मचारियों की ख़बरे आ रही थी। हमारे क्षेत्रीय प्रबंधक बहुत चिंतित थे। हेड ऑफिस व बैंक यूनियन के नेताओं का दबाव पड़ रहा था कि प्रभावित शाखाओं में जाकर कर्मचारियों की सहायता व स्थिति की रिपोर्ट दो। परंतु, इस भंयकर परिस्थिति में कौन जाये? वहाँ जाने से सभी घबरा रहे थे। राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय समाचार पत्रों, टी.वी. चैनलों पर लाइव तस्वीरें और ओडिशा निवासियों द्वारा भंयकर तबाही की जानकारी मिल रही थी।

ओड़िशा का रेल–रोड़ एवं वायुमार्ग से सम्बन्ध कट गया था। संचार व्यवस्था पूरी तरह से ठप्प पड़ गयी थी। वस्तु स्थिति ऐसी थी कि कलकत्ता में कार्यरत् ओड़िशा के रहने वाले बैंक कर्मचारी यहाँ तक कि बैंक यूनियन के नेताओं का भी ओड़िशा जाने का साहस नहीं हो रहा था।

ऐसी भयावह परिस्थिति में जब लोग वहाँ से निकल रहे थे मैंने निश्चय किया कि मैं वहाँ जाऊँ और वस्तु स्थिति की जानकारी दुनियां को दूँगा। 3 नवम्बर 1999 को पहली वायु यात्रा भुवनेश्वर के लिये शुरू हुई। मैंने उसी शाम सात बजे की पहली वायु सेवा से जाने का निश्चय किया। दो बड़े अटैचीकैस में ब्रैड–बिस्कुट, भुजिया, चावल, गुड़–चीनी, चाय की पत्ती, पाऊडर, दूध के डिब्बे, दैनिकचर्या का सामान अपने साथियों एवं उनके परिवारजनों के लिये लेकर चल दिया इस संदेश के साथ की, ''इस आपदा की घड़ी में सारा बैंक उनके साथ खड़ा है।''

मैं नियत समय पर कलकत्ता एयरपोर्ट पहुँच कर प्रस्थान कक्ष में प्रतिक्षा करने लगा। मैंने अनुभव किया की ओड़िशा जाने वाले यात्रियों के चेहरे पर एक अज़ब सा खौफ़तारी था। मैं अपने ही विचारों में खो गया। मेरा परिवार दिल्ली में था जिन्हें मैंने फ्लाइट से चलते वक्त ही बताया था। उन्हें कुछ ज्यादा कहने–सुनने का मौका ही नहीं मिला।

मेरी तन्द्रा भंग हुयी, ''माफ करना सरदार जी आप भुवनेश्वर जा रहें है।'' देखा बीस–बाइस वर्ष का एक नौजवान खड़ा था हाथ में दो पैकेट लिए हुए। कहने लगा, ''इन में खाने का सामान है। भुवनेश्वर में इन्हें जरूरतमंदों में बांट दीजियेगा।'' मैं अभी लोगों की स्वार्थपरता पर दुखी हो रहा था, नौजवान की बात सुनकर ह्रदय करूणा से भर उठा। कृतज्ञता से भरकर मैंने पैकेट थाम लिये। अब! मुझ में एक नयी स्फूर्ति आ गयी थी।

एयरपोर्ट अधिकारियों ने सहयोग किया, ना ही मेरी अटैची कैस खाने के पैकेटस का वज़न चैक किया।

जहाज में मेरे साथ वाली सीट पर बैठा सहयात्री बता रहा था, उस का परिवार जगन्नाथ पुरी में रहता है। उसके परिवार से कोई खबर नहीं है उसके बीवी–बच्चों, बूढ़े माँ–बाप पर क्या गुजर रही होगी। खौफ की छाया उसके चेहरे पर स्पष्ट दिखायी दे रही थी। वह र्निविकार भाव से जहाज की खिड़की से फैले अनंत काले आकाश को देखने की कोशिश कर रहा था।

मैंने जहाज़ के स्टीवर्ड से पूछा, ''जनाब! भुवनेश्वर में ठहरने के लिये कौन सा होटल मिल सकेगा?'' उसने मेरी ओर ऐसे देखा जैसे मैंने कोई गुस्ताखी कर दी हो। वह बोला, ''सरदार जी! होटल कहाँ चल रहे हैं! वहाँ के निवासी तो स्वयं ही निराश्रित है। खैर! अभी तो जहाज के सही–सलामत उतरने की कामना कीजिये। मैंने कनखियों से देखा मेरे आस–पास के सहयात्रियों के चेहरे पर भाव था, ''ये बेचारा कहां फंस गया!'' उनके भावों को पढ़ मन ही मन में मैंने कहा ''जब सिर दिया ओखल में तो मूसल से क्या डरना। मैं भी तो एक

मिशन पर जा रहा था स्टीवर्ड को क्या पता''? मैं बोला, ''कृपया एक ठण्डा जूस का गिलास दीजिये''! फिर ज़ोर से बोला,''अगर मरना ही है तो ठंडा जूस पी कर क्यूं ना मरूं''। सहयात्रियों ने ज़ोरदार ठहाका लगाया। जहाज का गमगीन माहौल बदल गया था, टैंशन कुछ कम हो गयी थी।

ज़हाज में घोषणा हो रही थी अपनी–अपनी सीट बैल्ट बांध लीजिये ज़हाज एयरपोर्ट पर उतरने वाला है। खिड़की से नीचे झांक कर देखा तो कहीं भी रोशनी का नामों निशां नहीं था। सभी ओर गहन काला अंधकार पसरा पड़ा था। मेरा सहयात्री सहमते हुये बोला,''यह पायलेट के धैर्य और ट्रेनिंग की परीक्षा है''। जहाज हिचकोले लेते हवाई पट्टी पर दौड़ रहा था।

सिवाय हम यात्रियों और गिनती के कर्मचारियों के अलावा एयरपोर्ट सुनसान दिखाई दे रहा था। एक पुलिस ऑफिसर ने पूछा,''लोग, यहाँ से निकल रहे हैं और आप इतने सामान के साथ यहाँ, ये खाने का सामान तो भूखे–प्यासे लोग लूट लेंगे।'' मेरे आने का मन्तव्य बताने पर उन्होंने एक टैक्सी मंगाई और ड्राइवर से कहा,'' इन्हें सिद्धार्थ होटल ले जाओ क्यूं कि अकेले उसी होटल में लाइट है, जैनरेटर है इन्हें होटल पहुँचाने पर मुझे फोन पर बता देना''। मुसीबत की घड़ी में जरा सी भी सहायता आपको साहस देती है। मैंने इंस्पेक्टर साहब का धन्यवाद किया।

टैक्सी ड्राइवर मुरगेश भला मानुष था। उसने बिना मोल–भाव किये टैक्सी में सामान चढ़ाने में मदद की। रात के नौ बजे ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर ऐसे लग रही थी मानों इस शहर में कोई रहता ही नहीं हैं, चारों तरफ मरघट सी खामोशी छायी हुयी थी। टैक्सी कुछ ही दूर चली थी कि उसकी हैडलाईटस् में सड़क के बीच तीन–चार लोग खड़े रूकने का इशारा कर रहे थे। टैक्सी उनके पास आ कर रूक गई। मैं सांस रोके उनकी अगली कार्यवाही की प्रतिक्षा कर रहा था। ड्राइवर ने उनसे बात की, मुझे बैठा देख उन्होंने जाने का इशारा किया। मैंने कलकत्ता एयरपोर्ट में नौजवान द्वारा दिए दो पैकेट्स में से नमस्कार करते हुये एक पैकेट उन्हें दिया। हमारी टैक्सी जब तक उनकी आंखो से ओझल नहीं हो गयी वे हाथ हिलाते रहे। मुरगेश ने कहा,''मैं आपको जगतसिँहपुरा ले जाऊँगा जहाँ सबसे ज्यादा विनाश हुआ है''।

होटल सिद्धार्थ में कहीं–कहीं लाइट जल रही थी। होटल मैनेजर ने बताया की,''यहाँ कुछ देशी–विदेशी जर्नलिस्ट ठहरे हुए हैं जो महाचक्रवात की खबरों को देश–विदेश में भेजते हैं, इसीलिये यहाँ जैनरेटर का प्रबन्ध किया गया है''। मैंने मुरगेश को टैक्सी का भाड़ा दिया और साथ ही खाने का पैकेट दिया उसने कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा कि, ''वह सुबह आ जायेगा। कल जगत सिंह पुरा चलेंगे यद्यपि सड़क नाममात्र को रह गयी है''। होटल मैनेजर ने बताया कि किचन बंद हो गया है, खाना नहीं है सुबह नाश्ता मिलेगा। होटल सिद्धार्थ के कमरा नं. 86 में बिस्तर पर लेटा, तो कलकत्ता में चलने से पहले टी.वी., समाचारपत्रों, लोगों द्वारा तबाही–बर्बादी की तस्वीरें ज़हन में ताजा हो उठी जिनकी सच्चाई का थोड़े से वक्त में ही मुझे अहसास होने लगा था। कल इनसे रूबरू होना है। मैं मानसिक और शारीरिक रूप से थका हुआ था, ना जाने किस वक्त नींद ने मुझे अपने आगोश में भर लिया।

सुबह ठीक नौ बजे मेरा दोस्त मुरगेश टैक्सी ले कर आ गया था। उसके चेहरे पर दैवीय मुस्कान खिली थी। 4 नवम्बर 1999 को मैं अशोक नगर की शाखा में अपने बैंक के साथियों के बीच था। मेरे द्वारा लाये गये खाने के सामान से ज्यादा उन्हें खुशी थी कि इस महाविपत्ति में भी बैंक का एक अधिकारी उनके दुःख में शरीक होने के लिये आया है। मैनेजर केबिन में कुछ स्टाफ मैम्बर आ गये थे। जिन्होंने इस भंयकर त्रासदी को नज़दीक से देखा था। हर एक अपनी आप–बीती बताना चाहता था। ब्रॉंच मैनेजर कलैर साहिब ने बताया कि वे लोग गत् सात दिनों से बाहरी दुनियाँ से कटे रहे हैं। जो मेम्बर 29 अक्टूबर को बैंक आए थे वे लोग दो दिनों तक भूखे–प्यासे, डरे–सहमें बैंक में ही कैद रहे थे।

सकून देने वाली बात थी कि बैंक की दोनों शाखाओं भुवनेश्वर और कटक के सारे स्टाफ मैम्बर व उनके परिवारजन सुरक्षित थे। बैंक शाखाओं में खिड़कियों आदि के शीशे टूट गये थे, परंतु बैंक रिकार्ड को कोई नुक्सान नहीं हुआ था।

मैनेजर साहब ने बताया कि ओड़िशा सरकार इस भयावह परिस्थिति के लिये तैयार नहीं थी, ना तो विस्थापितों को आश्रय देने के लिये शैल्टर होम थे, ना ही N.D.R.F. (NATIONAL DISASTER RESPONSE FORCE) सरकारी महकमा पूरी तरह सक्षम था। लोग भी अपना घर–परिवार छोड़कर जाना नहीं चाहते थे। जब 29 अक्टूबर दोपहर दो बजे महाचक्रवात हावी हुआ तो ओड़िशा बिखर गया। ओड़िशा को मानों प्रकृत्ति की आपदा महाचक्रवात के रहमो करम पर छोड दिया था।

वस्तु स्थिति यह थी कि ओड़िशा से सटे समुद्र तटों में 25 से 30 फीट ऊँची प्रलयंकारी लहरें उठ रहीं थी, समुद्र का जल–स्तर बीस फीट ऊपर उठ गया था। 280 से 300 कि.मी. की रफ्तार से भूतही हवायें चल रही थी। सबसे ज्यादा नुकसान जगत्सिंहपुरा, केन्द्र पारा, कटक् खुंदरा, जगन्नाथ पुरी, भदरक्, कॉलासोर, क्यूनझार, म्यूरबंझ आदि समुद्र से सटे शहरों–गाँवों को हुआ था, संचार व्यवस्था पूरी तरह से ठप्प पड़ गयी थी। हालात इतने खराब थे कि ओड़िशा के मुख्यमंत्री कार्यालय में केवल लैंडलाईन टेलीफोन काम कर रहा था। 29 अक्टूबर पूरा दिन ओड़िशा बाहरी दुनियाँ से कटा हुआ था। सरकारी आकड़ों के अनुसार 10,000 से अधिक लोग मरे थे, जब कि गैर–सरकारी तौर पर संख्या लगभग 25000 बताई जाती है। महामारी ना फैले मृत शरीरों का दाह–संस्कार एक

बड़ी चिता जलाकर बुलडोज़र की मदद से किया जा रहा था। मवेशी–पालतू जानवरों का तो सफाया ही हो गया था।

शाखा के एक भुक्तभोगी सदस्य ने अपनी डॉयरी में 29 अक्टूबर का आंखों देखा हाल लिखा था। ''सब चला गया! सब खत्म हो गया! 200 से 300 कि. मी. की रफ़्तार से चलता डरावनी आवाज़ करता अंधड़, सैकड़ों साल पुराने जड़ से उखड़ते बिजली की तारों पर गिरते पेड़ जीवित बिजली की तारों से निकले शोले, उनकी चपेट में आये चीखते–चिल्लाते आर्तनांद करते इंसान, रात के अन्धेरे में गुस्से में फन फैलाये पुरानी–गिरती इमारतों से निकलते किंग कोबरा... किसी ने नर्क नहीं देखा है तो यह है नर्क।

इस दिल दहला देने वाले आंखों देखे वर्णन से सभी सकते में आ गए थे। मैनेजर केबिन में खामोशी छा गई थी। स्टाफ एवं लोगों की दर्दभरी आप बीती सुनकर मन वितृष्णा से भर उठा साथ ही मेरा निश्चय भी दृढ़ हो गया की मैं स्वयं जाकर उन स्थानों को देखूंगा जहाँ सबसे ज्यादा नुक्सान हुआ है।

दोपहर का कब एक बज गया पता ही नहीं चला मैंने जगत सिंह पुरा जहां सबसे ज्यादा नुकसान हुआ था जाने की इच्छा व्यक्त की तो मैनेजर साहब कहने लगे,'' वो तो ठीक है सर, पर वहाँ कोई टैक्सीवाला तो जायेगा नहीं।'' मैंने कहा कि हमारा टैक्सीवाला मुरगेश हमें वहाँ ले जायेगा।

मैनेजर साहिब कहने लगे की आपने कौन सी घुट्टी उसे पिलाई है। मैनेजर साहिब और एक अन्य साथी मेरे साथ जाने को तैयार हो गये। ड्राइवर ने बताया की अभी चलेंगे तो वापिस आते रात के दस–ग्यारह बज सकते है, हो सकता है कि ज्यादा देर भी लग जाये। मुझे अपने दोस्त मुरगेश पर भरोसा था।

भुवनेश्वर से निकलते ही गांव शुरू हो गये थे और शुरू हो गया था तबाही–बर्बादी का मंजर। एक तो ओड़िशा भारत का गरीब प्रांत है ऊपर से महाचक्रवात का महाविनाश। सड़क के दोनों ओर दूर–दूर तक बचे थे कच्चें मकानों के अवशेष झोपड़ियों का तो नामोंनिशा ही मिट गया था, कहीं–कहीं इक्का दुक्का पक्के मकान दिखाई दे जाते थे। वातावरण में असहनीय अज़ीब सी दुर्गन्ध फैली हुई थी। ड्राइवर ने बताया कि ये इन्सानों, जानवरों की सड़ती गलती लाशों की है अब महामारी फैलने का डर है, जो बच गये हैं उनका बुरा हाल है।

सड़क के दोनों ओर दूर–दूर तक टैक्सी को देखते ही सड़क पर खड़े बच्चें और बूढें दौड़ पड़ते इस आशा से कि कुछ खाने को मिल जाये। तबाही बर्बादी को देख मैनेजर साहिब कह रहे थे कि ''प्रकृति बहुत गुस्से में है''। मैं सोच रहा था, ''भारत गांवों में बसता है'' क्या बापू का यह ही सपना था।

पूरे रास्ते मैंने नोट किया था कि हमारे साथ ट्रकों का काफ़िला चला आ रहा है मैंने फिर पूछ ही लिया ये ट्रक कहां जा रहे हैं? मुरगेश ने बताया ये ट्रक पंजाब से आ रहे है। मैरे पूछने पर कि ये गांव वालों की लम्बी कतार कहाँ जा रही है? मुरगेश ने रहस्यमय ढंग से कहा,'' थोड़ी देर में ही आपको पता चल जायेगा''। पंजाब से आ रहे ट्रकों पर लिखा था, ''ओड़िशा के पीड़ितों के लिये, नवां शहर, पंजाब, शहर मोगा, अमृतसर। मेरे साथ बैठे मैनेजर साहिब कह उठते ये मेरे शहर का ट्रक है, कोशिश करते रोकने की लेकिन तब तक वो आँखों से ओझल हो जाता। मैं सोच रहा था पता नहीं कब संतो के डेरे पर पहुँचेंगे, देर रात वापसी फिर सुबह सात बजे की फ्लाईट भी है।

विचारों की तंद्रा तब भंग हुयी जब ड्राइवर लोगों से पूछ रहा था, ''स्कूल कहां है?'' हर ओर से आवाज़ें आनी शुरू हुई, हर आवाज़ थी आतुर राह बताने को। मानव पर जब आपदा आती है तो उसका हृदय करूणा से भर उठता है, उसे अपना स्वार्थ नहीं अपितु दूसरे के कष्ट को बांटने में परम संतोष की अनुभूति होती है। ये क्या? स्कूल के मैदान में इतनी भीड़।

शाम के झुटपुटे में सारा माहौल प्रकाश पुँज से आलोकित हो रहा था। हमारे साथ आए हुए बैंक के साथी जो ओड़िशा का रहने वाला था ने बताया कि पंजाब से एक संत जी अपने 200 सेवादारों के साथ आये हैं, उन्होंने यहाँ डेरा डाला हुआ है। जहाँ सरकार, सरकारी तन्त्र, स्थानीय संस्थाएं अपनी ड्यूटी में फेल हो गयी है, दिखाई भी नहीं दे रही है, वहीं संत जी लगभग एक लाख भूखे–प्यासे त्रस्त लोगों को लंगर खिला रहे है। जीवन में बहुत कम अवसर मिलते है जब किसी ऐसे दिव्य पुरुष के दर्शन कर सकें।

अब वक्त था संतजी से मिलने का। देखा! मैदान में टैंट लगा है। एक चारपाई पर संत जी बैठे थे। साठ–पैसठ वर्ष के, पतला–दुबला शरीर, चेहरे पर सफ़ेद–धवल दाढ़ी, छोटी सफेद पगड़ी, पंजाब के किसानों द्वारा आमतौर पर पहने जाने वाला कुर्ता–पज़ामा, लगा एक आम आदमी हैं पर नूरानी चेहरे से अधिक देर नज़र नहीं मिला सका। मैं व साथी नतमस्तक खड़े थे।

मैंने कहा, ''संत जी प्रकृति ने बहुत नुकसान किया है। लगता है

बच्चों को पालना, उन्हें अच्छे व्यवहार की शिक्षा देना भी सेवाकार्य है, क्योंकि यह उनका जीवन सुखी बनाता है – स्वामी रामसुखदास

प्रकृति बहुत नाराज़ है''। ''भाई गलती किसकी है'',संत जी ने कहा, ''आज से सदियों पहले गुरूनानक देव जी ने कहा था, पवण–गुरू, पानी–पिता, माता–धरत, महत्त; क्या हमनें इनके प्रति अपना कर्त्तव्य निभाया, नहीं! बल्कि मानव ने निज स्वार्थ वश प्रकृत्ति का दोहन किया, तिरस्कार किया। हमें अपने गुनाहों की सजा तो मिलेगी ही।'' फिर कहने लगे,''बहुत रात हो गयी है और आपने वापिस भुवनेश्वर जाना हैं, मिलकर अच्छा लगा, सब! लंगर छक्क कर जाना''। वाहे गुरू जी का खालसा, वाहे गुरूजी की फ़तह''। हमनें भारी हृदय से गुरूजी से विदा ली।

स्कूल के मैदान में सैकड़ों की तादाद में बच्चे, बूढ़े, जवान, स्त्री, पुरुष पंक्ति बद्ध बैठे हैं। सामने खाने का पत्तल है। वाहे गुरू दाला जी, वाहे गुरू चावल जी के उद्घोष के साथ सेवादार भोजन करा रहे हैं। एक पंगत उठती है तो दूसरी बैठ जाती है भोजन करने के लिये। एक सज्जन ने कहा, ''यह सिलसिला चौबीस घंटे चलता रहता है, भोजन करने वाले थक जाते हैं पर सेवादार नहीं... गुरु के लंगर से कोई भूखा नहीं जाता है''। स्कूल का मैदान प्रकाश से जगमगा रहा था। एक स्थान पर लंगर पक रहा था, बड़ी–बड़ी देगें, कड़ाहें तवे तेज आग पर रखे हुए है। सेवादार बड़े–बड़े कड़छुलों से दाल, सब्जी, चावल, रोटियां पका रहे हैं। पार्श्व में त्रस्त, दुखीः मानवता को शांति प्रदान करने वाला इलाही वाणी शब्द कीर्तन सुनायी दे रहा था। हमनें भी पंक्ति में बैठकर लंगर का आनंद लिया। मुरगेश के लिये यह नया अनुभव था।

एक तरफ पंजाब के भिन्न–भिन्न शहरों से आये खाद्य साम्रगी से लदे ट्रक खड़े हैं। हर ट्रक पर अपने शहर–गाँव का नाम लिखा है और लिखा है, ''हम आप के साथ हैं''। दूसरी ओर ट्रकों की लम्बी कतारें लगी हैं जिनमें पका हुआ तैयार लंगर लदा है। कल प्रातः सात बजें निकल जाएंगे उन स्थानों पर जहां से लोग लंगर के लिये नहीं आ सकते; जहाँ महाचक्रवात ने महाविनाश किया है। सेवादारों, स्थानीय लोगों से विदा लेते उनकी निःस्वार्थ सेवा,''सरबत दा भला'' के प्रति हृदय समर्पण कृतज्ञता, करूणा से भर उठा। बैंक का साथी कह रहा था, ''किसी ने भारत महान के दर्शन करने है तो यहाँ है, ''भारत महान्''। रात ग्यारह बजे अन्धकार में दौड़ती कार की हैडलाईट्स की रोशनी में विनाशलीला और भी भयावाह हो उठी थी। मरे हुए इंसानों, जानवरों की सड़ती–गलती लाशों से निकलती दुर्गन्ध सहन नहीं हो रही थी; लगता था एक बड़ा सा शमशान घाट है जो खत्म होने को नहीं आ रहा।

चलते वक्त मैंने ड्राइवर से पूछा था,''टार्च है, रास्ते में काम आ सकती है''। वह बोला था, ''रास्तें में ले लेंगे'', फिर सब भूल गये। रात को कार का पहिया पंचर हो गया; तो हमारा बैंक का साथी कह रहा था, ''अगर कार सड़क पर गिरे हुये पेड़ों से टकरा गयी तो मौत निश्चित है''। निस्तब्धता को भंग करते हुये आवाज़ आई, ''संत जी के दर्शन कर अब मुसीबतों से डर नहीं लगता'', ड्राइवर मुरगेश कह रहा था।

मैनेजर साहब व बैंक के साथी को उनके घरों में पहुँचाकर रात एक बजे होटल सिद्धार्थ पहुंचे। मेहरबां साथी, ड्राइवर मुरगेश को टैक्सी का भाड़ा देते हुये शुक्रिया कहा। 'सर! आज मुझे एक नया तजुर्बा हुआ है'', मुरगेश कह रहा था, ''इस महान् विपदा में हमारे अपने हमारा साथ छोड़ गए हैं, अनजान लोगों ने हमारे साथ खड़े हो कर जीवनदान दिया है, आज की यात्रा को भूला नहीं पाऊँगा।'' टैक्सी में बैठते हुए उसकी आंखे भर आई थी। ''मैं भी नहीं'', दूर आखों से ओझल होती टैक्सी को देखते हुये मैंने कहा।

होटल का रिसेपनिष्ट बैठा था, देखते ही बोला,''सर खाना खत्म हो गया है।'' मैं उस से चाबी लेकर रूम नं. 86 की ओर बढ़ गया। उसे क्या पता था, आज मैंने, गुरू का अमृतमय लंगर छका है जो भाग्य से नसीब होता है!

रात के डेढ़ बज गए थे। सुबह सात बजे की फ्लाइट से वापिस कलकत्ता जाना है। ना जाने किस वक्त निद्रा ने मुझे अपने आगोश में भर लिया। मैंने 2001 में बैंक से स्वैच्छिक अवकाश ले लिया था।

याद आया तब मैंने अपना महाचक्रवाती तूफ़ान ओड़िशा का यात्रा वृतांत लिखा था, पर वी.आर.एस, स्वैच्छिक अवकाश ग्रहण के कारण पूरा नहीं कर सका। पुराना रिकार्ड ढूंढा तो लाल रंग की फाइल मिल गयी जिस पर लिखा था "SUPER CYCLONE 1999 ORISSA" समय के साथ धुंधली होती लिखाई, पीले पड़ते कागज़ो पर आड़े तिरछी नोटिंग लिखी थी। फिर उस मानव त्रासदी को देखने, सुनने, गुज़रने की याद, एक ना भूलाए जाने वाले चलचित्र की भाँति हृदय पटल पर सजीव हो उठी थी।

आज से 21 साल पहले अपने बैंक के साथियों से वायदा किया था अपने उनके कड़वे अनुभवों को शब्दों में बांधने का..... आज पूरा हुआ!!

सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक

विदाई

प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग में पदस्थ श्री राजीव राय, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) बैंक से दिनांक 31.07.2020 को सेवानिवृत्त हुए। श्री राजीव राय ने वर्ष 1982 से अपनी बैंकिंग यात्रा प्रारंभ की थी। अपनी बैंकिंग सेवा के दौरान वे अंचल कार्यालय लखनऊ, अंचल कार्यालय देहरादून, प्रधान कार्यालय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग तथा प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग में पदस्थ रहे। राजभाषा विभाग ने उनके कार्यकाल के दौरान राजभाषा के क्षेत्र में विभिन्न पुरस्कार यथा राजभाषा कीर्ति, दिल्ली नराकास से गृह–पत्रिका 'अंकुर' तथा उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए पुरस्कार प्राप्त किए।

उप महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री अमित श्रीवास्तव, श्री राजीव राय जी (वरिष्ठ प्रबंधक) को सेवानिवृत्ति प्रतीक चिह्न प्रदान करते हुए।

उप महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री अमित श्रीवास्तव के साथ राजभाषा विभाग के समस्त स्टाफ ने श्री राजीव राय (वरिष्ठ प्रबंधक) को भावपूर्ण विदाई दी।

रचनाकारों से निवेदन

बैंक के प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित की जा रही हिंदी गृह–पत्रिका ''राजभाषा अंकुर'' में प्रकाशन हेतु रचना भेजते समय कृपया अपना फोटो तथा रचना के अंत में अपना नाम, शाखा/कार्यालय का पूरा पता, मोबाइल नंबर तथा अपने बैंक का खाता संख्या (14 अंकों का) भी अवश्य लिखें। बैंक से सेवानिवृत्त स्टाफ सदस्य रचना भेजते समय उपरोक्त के अतिरिक्त अपने घर का पता तथा अपना पैन नं. (PAN No.) भी अवश्य भेजें।

मुख्य संपादक

शिक्षा और प्रशिक्षण का एकमात्र उद्देश्य समस्या-समाधान होना चाहिये – जार्ज बर्नार्ड शा

हिंदी कार्यशाला

प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग द्वारा प्रधान कार्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। उप–महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री अमित श्रीवास्तव सहभागियों को संबोधित करते हुए। साथ हैं वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री निखिल शर्मा।

आँचलिक कार्यालय बरेली में कार्यशाला में राजभाषा अधिकारी श्री वैभव मिश्रा सहभागियों को संबोधित करते हुए।

आँचलिक कार्यालय नोएडा में कार्यशाला का आयोजन किया गया। आँचलिक प्रबंधक के साथ सभी सहभागी।

आँचलिक कार्यालय गुरूग्राम में कार्यशाला का आयोजन किया गया। राजभाषा अधिकारी श्री रूप कुमार कार्मिकों को संबोधित करते हुए।

बैंक और ग्राहक के मध्य भाषा का महत्व

आनंद प्रिय राहुल

बैंक एक ऐसी संस्था है जहां लेनदेन का कार्य होता है। ग्राहक या उपभोक्ता वह व्यक्ति/संस्था है, जो आपकी संस्था के उत्पाद अथवा सेवा में प्रयोग करता/करती है। आपकी संस्था में आया व्यक्ति आपका ग्राहक है, चाहे वह आपसे वित्तीय लेनदेन अथवा वित्तीय सेवाएं प्राप्त करता हो या नहीं। इसको समझने के लिए महात्मा गांधी जी के ग्राहक के प्रति विचार को समझना होगाः–

"ग्राहक हमारे परिसर में आने वाला सबसे महत्वपूर्ण अतिथि है। वह हम पर निर्भर नहीं है। हम उस पर निर्भर हैं। वह हमारे कार्य में बाधा नहीं है वह इसका प्रयोजन है। वह हमारे व्यापार के लिए बाहरी व्यक्ति नहीं है। वह इसका हिस्सा है। हम उसे सेवा देकर उसे कोई लाभ नहीं दे रहे हैं वरन वह हमें ऐसा करने का अवसर देकर हमें लाभ दे रहा है।"

–महात्मा गांधी

बैंक और भाषा – बैंक के लेनदेन के कार्य को बैंक के अधिकारी और कर्मचारी करते हैं। अब चूंकि बैंक एक ऐसी संस्था है जिसमें किसी भी अधिकारी/कर्मचारी की नियुक्ति/तबादला संपूर्ण भारत में कहीं भी हो सकती/सकता है। अलग–अलग प्रांतों/क्षेत्रों से आए अधिकारी/कर्मचारी संस्था के लिए एकजुट होकर कार्य करते हैं। प्रत्येक अधिकारी/कर्मचारी की अपनी एक संवाद अपनी एक भाषा होती है। इन सभी विभिन्न क्षेत्रों के अधिकारियों/कर्मचारियों को जो भाषा जोड़कर रखती है। वह निश्चित रूप से हिंदी ही है। दक्षिण भारत का कोई अधिकारी/कर्मचारी पश्चिम भारतीय सहकर्मी के साथ उत्तर भारत में काम करता है तो वह हिंदी है, जो उनकी संस्था के लिए कार्य करने की प्रेरणा देती है। सभी बैंकों के प्रधान कार्यालय भिन्न–भिन्न प्रांतों में हैं और वह बैंक के किसी अन्य प्रांत में सुचारू रूप से कार्य कर पा रही हैं, तो निश्चित रूप से उसमें भी हिंदी भाषा का प्रमुख योगदान है।

ग्राहक और भाषा– ग्राहक के आपकी संस्था में प्रवेश करते ही उसका आपके अधिकारी/कर्मचारी से संवाद स्थापित होता है। आपकी संस्था में आए "वाक इन" ग्राहकों को ग्राहक कैसे बनाना है तथा मौजूदा ग्राहकों कैसे ग्राहक बनाए रखना है, यहां आपकी संस्था के अधिकारियों और कर्मचारियों की भाषा शैली पर निर्भर करता है। ग्राहक से संवाद करने के लिए मुख्यतः ग्राहक की भाषा का ही प्रयोग किया जाना चाहिए। ग्राहक की भाषा का प्रयोग करते ही आपके ग्राहक के साथ संवाद में मधुरता स्थापित हो जाती है।

आप अपनी भाषा शैली से ही किसी ऐसे व्यक्ति को भी अपना ग्राहक बना सकते जो व्यक्ति बैंक में सिर्फ मांग पत्र बनवाने, आपकी शाखा में लगे एटीएम के प्रयोग करने की विधि जानने, आधार कार्ड बनवाने अथवा सिर्फ ब्याज की दर पूंछने आया हो। ग्राहक से संवाद में सबसे महत्वपूर्ण चीज यह है कि ग्राहक की जरूरत समझने की कोशिश करें, उसको ध्यान से सुन कर उसकी भाषा शैली में नम्रतापूर्वक उत्तर देकर व समस्याओं का समाधान करें। ऐसा करने मात्र से ग्राहक का आपके प्रति आत्मीय रिश्ता स्थापित हो जाता है। बैंक एक ऐसी संस्था है, जहां सबसे अधिक विश्वास की आवश्यकता होती है।

उदाहरणस्वरूप आज 21वीं सदी के तकनीकी युग में भी जब कोई ग्राहक को किसी बड़ी रकम को सावधि जमा करना होता है, तो सबसे पहले उसके मस्तिष्क में विचार आता है राष्ट्रीयकृत बैंक का। ऐसा इसलिए ही है क्योंकि राष्ट्रीयकृत बैंक के प्रति ग्राहकों का आज भी विश्वास कायम है और आगे उस विश्वास को निरंतर कोई चीज और बढ़ा सकती है तो वह है हमारी भाषा।

ग्राहक से संवाद करने में भी कभी भाषा का संकोच ना करें। ग्राहक को उसकी समस्या का निवारण/समाधान सबसे उचित और सहजता से ग्राहक की भाषा में किया जा सकता है। कभी भी अपने आप को ग्राहक से ऊंचा मानकर उस पर रौब न दिखाएं। बुजुर्ग ग्राहकों का विशेष ख्याल रखें। ग्रामीण क्षेत्रों में यदि कोई ग्राहक पासबुक की जगह "किताबिया" कह रहा है तो उचित और भावपूर्ण संवाद में आप भी उससे "किताबिया" की ही मांग करें। सोचिए! अगर आप उससे बार–बार पासबुक की मांग की तो वह कितना असहज और आश्चर्यचकित सा महसूस करेगा। संवाद में बाधा उत्पन्न होगी किंतु आपके द्वारा उसकी भाषा के प्रयोग करते ही वह तुरंत प्रतिक्रिया देगा और सरल भी हो जाएगा, ग्राहक सेवा भी बढ़ेगी।

ग्राहकों से उनकी भाषा में बात करने से जिस अनुपात में आत्मीय रिश्ते का निर्माण होता है उसी अनुपात में बैंक और ग्राहक के विश्वास में बढ़ोतरी भी होती है। जैसे–जैसे विश्वास बढ़ता जाएगा

जब आप कुछ गंवा बैठते हैं, तो उससे प्राप्त शिक्षा को न गंवाएं – दलाई लामा

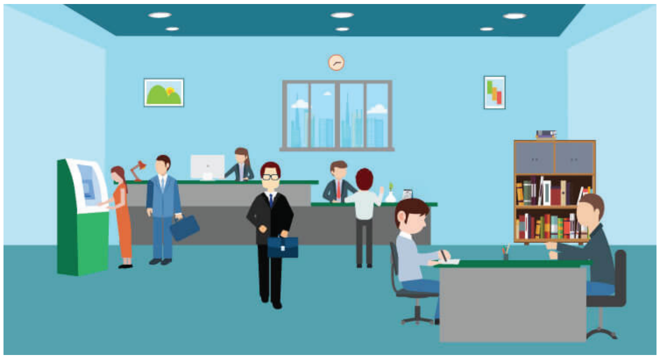

तो ग्राहक आपके साथ अपने सुख–दुख भी साझा करेगा, जैसे–जैसे ग्राहक से बैंक का रिश्ता मजबूत होगा बैंक सदा तरक्की की ओर अग्रसर रहेगा। जब ग्राहक से बैंक का रिश्ता बन जाता है, फिर बैंक को वित्तीय व्यवसाय के लिए ग्राहक ढूंढना नहीं पड़ता। ग्राहक ही बैंक का मौखिक प्रचार करता है और व्यवसाय स्वयं आपके पास आता है।

गृह मंत्रालय के अधीन कार्य करने वाला राजभाषा विभाग भी आदेश देता है कि ग्राहक और बैंक के बीच रिश्ते/विश्वास बढ़ाने के उद्देश्य से बैंक के सभी प्रपत्र, पत्राचार, प्रकाशन स्थानीय भाषा में अंग्रेजी में अथवा हिंदी भाषा में जारी किए जाने अति आवश्यक होते हैं। सभी ऋण आवेदनों, सुरक्षा दस्तावेजों को मौखिक रूप से स्थानीय भाषा में अंग्रेजी में अथवा हिंदी में बोलकर ग्राहक को सुनाया जाना चाहिए। निष्कर्ष स्वरूप बैंक और ग्राहक के संवाद की भाषा/शैली से बैंक के व्यवसाय पर प्रभाव पड़ता है। भाषा से ही संवाद को सरल या कठिन बनाया जा सकता है। बैंकों की ग्राहक सेवा में भाषा कभी भी अड़चन नहीं बनेगी यदि हम ग्राहकों की आवश्यकता अनुसार उसकी भाषा और शैली में उसको सेवाएं देंगे।

जैसे–जैसे सरकार अपनी योजनाओं के तहत बैंक गांव–गांव अपनी बैंकिंग सेवा पहुंचा रहे हैं, तो बैंकों का भी दायित्व है कि ग्राहक को उसकी भाषा में सेवाएं मिले, तभी वह बैंक से खुद को जुड़ा हुआ महसूस कर पाएगा अन्यथा असहज महसूस करेगा। इस दौर में जब सरकार की सभी योजनाओं का लाभ बैंक द्वारा भुगतान हो रहा है और भारत की 60% आबादी अभी भी गांव में ही निवास करती है तो बिना ग्राहक की भाषा के प्रयोग के बेहतर बैंकिंग सेवा की उम्मीद नहीं की जा सकती।

हमारी भाषा शैली ही ग्राहक से हमारा रिश्ता मजबूत करेगी, बैंक के प्रति ग्राहक निष्ठा रखेगा और उसका विश्वास मजबूत होगा। उसके बाद से ग्राहक का जो भी वित्तीय रिश्ता होगा। वह विश्वास का रिश्ता होगा और विश्वास के रिश्ते आसानी से नहीं टूटते हैं।

शाखा – गुमटी नं. 5 , कानपुर

विमोचन

बैंक के कार्यकारी निदेशक श्री अजित कुमार दास तथा वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री निखिल शर्मा एवं श्री देवेन्द्र कुमार जून 2020 तिमाही की राजभाषा अंकुर पत्रिका के साथ।

नोवल कोरोना वायरस (COVID 19)

भ्रांतियों से सावधान

कोरोना वायरस (COVID 19) महामारी की वजह से भारत समेत लगभग पूरी दुनिया एक अभूतपूर्व संकट का सामना कर रही है। इसके प्रसार को रोकने के लिए जरूरी है कि हमारे पास सही जानकारी हो और हम सावधान तथा जागरूक रहें। उम्मीद है कि यहाँ प्रस्तुत जानकारियाँ कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई में आपके काम आएंगी।

कोरोना वायरस के लगातार मामले सामने आ रहे हैं और लोगों में इसकी दहशत भी देखी जा सकती है। मगर कोरोना वायरस को लेकर फैली दहशत में अफवाहों का बड़ा हाथ है। सोशल मीडिया पर कई तरह के अफवाहों ने लोगों को और डरा दिया है। कोरोना वायरस भले ही घातक है, मगर इससे बचाव और सावधानियाँ बरतने से इसके संक्रमण से बचा जा सकता है। पेश हैं कुछ सुरक्षा उपाय...

क्या करें

- अपनी व्यक्तिगत स्वच्छता पर पूरा ध्यान दें।
- बार-बार हाथ धोने की आदत डालें। साबुन और पानी से हाथ धोएं या अल्कोहल-आधारित हैंड सैनिटाईजर का इस्तेमाल करें।
- छींकते और खाँसते समय अपनी नाक और मुँह को रूमाल या टिशू से ढंकें।
- उपयोग किए गए टिशू को उपयोग के तुरंत बाद बंद डिब्बे में फेंक दें।
- अपनी कोहनी के अंदरूनी हिस्से में छींके।
- अस्वस्थ (बुखार, सांस लेने में कठिनाई और खाँसी) महसूस करने पर डॉक्टर से मिलें। डॉक्टर से मिलने के दौरान अपने मुँह और नाक को ढकने के लिए मास्क का प्रयोग करें।
- किसी भी बुखार/फ्लू जैसे संकेत/लक्षण होने पर राज्य के हेल्पलाइन नंबर अथवा स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की 24x7 हेल्पलाइन नंबर 011-23978046 पर कॉल करें।
- अफवाहों से न घबराएं। जागरूक रहें, सचेत रहें।

क्या नहीं करें

- यदि आपको खाँसी और बुखार महसूस हो रहा है तो किसी के संपर्क में न आएं।
- किसी भी सार्वजनिक स्थान पर न थूकें।
- हाथ न मिलाएं।
- अपनी आँख, नाक और मुँह को स्पर्श न करें।
- हाथों की हथेलियों में न छींके और न ही खासें।
- अनावश्यक यात्रा न करें, विशेषकर प्रभावित इलाकों में।
- समूह में न बैठें, बड़े समारोहों में भाग न लें।
- अफवाह और दहशत न फैलाएं।

ध्यान रखें हमारी सावधानी ही हम सभी को इस महामारी से बचा सकती है।

इम्यूनिटी बढ़ाएं, कोरोना को हराएं

- प्रतिदिन कम से कम तीस मिनट योगासन, प्राणायाम और ध्यान करें।
- पूरे दिन सिर्फ गर्म पानी पिएं।
- हल्दी, जीरा, धनिया, लहसुन आदि का भोजन बनाने में प्रयोग करें।
- रोज सुबह और शाम को नाक के दोनों छिद्रों में तिल, नारियल या सरसों का तेल अथवा घी लगाएं। ध्यान रहे इसकी मात्रा बहुत ज्यादा न हो।
- रात को सोते समय हल्दी वाला दूध (गोल्डन मिल्क) पिएं।
- हर दिन तुलसी के तीन-चार पत्ते जरूर चबाएं अथवा तुलसी के अर्क का प्रयोग करें, अथवा एक या दो चम्मच सुबह-शाम च्यवनप्राश खाएं।
- आहार में विटामिन सी युक्त फलों का प्रयोग करें।

* विभिन्न स्रोतों से प्राप्त जानकारी के आधार पर

"आशा चाहे कितनी भी कम हो, निराशा से सदैव बेहतर होती है।"

डॉ सुमीत जैरथ, आई.ए.एस.
सचिव
Dr. SUMEET JERATH, I.A.S.
Secretary

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय
GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE
MINISTRY OF HOME AFFAIRS

अ.शा.प.संख्या : 12011/04/2020-रा.भा.(का-2) **दिनांक : 07 सितंबर, 2020**

प्रिय श्री कृष्णन,

मुझे यह सूचित करते हुए **अत्यंत** हर्ष और गर्व हो रहा है कि आपके **राष्ट्रीयकृत बैंक** को **वर्ष 2019-20** के दौरान राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कारों की **राष्ट्रीयकृत बैंक** की श्रेणी के अंतर्गत **'क'** क्षेत्र में **द्वितीय पुरस्कार** के लिए चुना गया है । कृपया अपने **राष्ट्रीयकृत बैंक** द्वारा हिंदी के प्रयोग व प्रसार की दिशा में किए गए सफल सद्प्रयासों के लिए राजभाषा विभाग की हार्दिक बधाई स्वीकार करें ।

2. कोविड-19 महामारी से उत्पन्न विकट परिस्थितियों के मद्देनजर भारत सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के अनुसरण में इस वर्ष दिनांक 14 सितंबर, 2020 को हिंदी दिवस के अवसर पर राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित नहीं करने का निर्णय लिया गया है। **ये पुरस्कार अगले वर्ष हिंदी दिवस के अवसर पर दिनांक 14 सितंबर, 2021 को दिए जाएंगे|**

हिंदी दिवस (14 सितंबर) की शुभकामनाओं सहित,

शुभेच्छु,

सुमीत जैरथ
07/09/2020

(डॉ. सुमीत जैरथ)

श्री एस. कृषणन,
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी,
पंजाब एंड सिंध बैंक,
प्रथम तल, 21-राजेन्द्र प्लेस,
नई दिल्ली-110008.

ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

Punjab & Sind Bank
(A Govt. of India Undertaking)

जहाँ सेवा ही जीवन-ध्येय है

आपके सपनों का घर अब आसान पहुंच में

पीएसबी उत्सव माला

पीएसबी अपना घर

शुन्य प्रोसेसिंग शुल्क

- घर/फ्लैट/प्लॉट के निमार्ण, खरीद और नवीनीकरण के लिए आवश्यकता अनुसार ऋण
- आकर्षक ब्याज दर**
- 30 वर्षों तक की अधिकतम पुनर्भुगतान अवधि
- परिवर्तन/परिवर्धन/मरम्मत के लिए अनुपूरक वित्तपोषण विकल्प

*नियम व शर्तें लागू *ब्याज दर -रियो रेट से जुड़ा

अधिक जानकारी के लिए, कृपया हमारी नजदीकी शाखा से संपर्क करें
डॉयल करें 1800 419 8300 (टॉल फ्री पूरे भारत में) या हमारी वेबसाइटः www.psbindia.com पर विज़िट करें।

फोन या ईमेल के माध्यम से अपने इंटरनेट बैंकिंग ब्यौरे, जैसे यूजर आईडी/पासवर्ड या अपने क्रेडिट कार्ड/डेबिट कार्ड के नंबर/सीवीवी/ओटीपी किसी को ना बताएं।